• जयपुर, सोमवार 25 नवंबर 24 • वर्ष 14 • अंक 97 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

पेज @3 डंडिया की कलम ने सच को सच कहने की हिम्मत दी : राज्यपाल कटारिया...

पेज @4 'श्रीमद्भगवत गीता, सनातन जय घोष' पर राजस्थान विश्वविद्यालय...

पेज @8 जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों की मिलीभगत से जोन 5 स्थित विवेक...

स्वामी विवेकानंद की जयंती पर दिल्ली में लगेगा युवा विचारों का महाकुंभः पीएम मोदी

नई दिल्ली/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के 116वें संस्करण में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' के बारे में बताया। जिसका आयोजन स्वामी विवेकानंद की 162वीं जयंती पर आयोजित होगा।

मन की बात में पीएम मोदी ने कहा, युवा मन जब एकजुट होकर देश की आगे की यात्रा के लिए मंथन करते हैं, चिंतन करते हैं, तो निश्चित रूप से इसके ठोस रास्ते निकलते हैं। आप जानते हैं 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर देश युवा दिवस मनाता है। अगले साल स्वामी विवेकानंद जी की 162वीं जयंती है। इस बार इसे बहुत खास तरीके से मनाया जाएगा। इस अवसर पर 11-12 जनवरी को दिल्ली के भारत मंडपम में युवा विचारों का महाकुंभ होने जा रहा है, और इस पहल का नाम है विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग'।

उन्होंने आगे कहा भारत-भर से करोड़ों युवा इसमें भाग लेंगे 7 गांव, ब्लॉक, जिले, राज्य और वहां से निकलकर चुने हुए ऐसे दो हजार युवा भारत मंडपम में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' के लिए जुटेंगे। आपको याद होगा, मैंने लाल किले की प्राचीर से ऐसे युवाओं से राजनीति में आने का आहवान किया है, जिनके परिवार का कोई भी व्यक्ति और पूरे परिवार का पॉलिटिकल बैकग्राउंड नहीं है, ऐसे एक लाख युवाओं को, नए युवाओं को, राजनीति से जोडने के लिए देश में कई तरह के विशेष अभियान चलेंगे।

विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' भी ऐसा ही एक प्रयास है। इसमें देश और विदेश से एक्सपर्ट्स आएंगे। अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हस्तियां भी रहेंगी। मैं भी इसमें ज्यादा-से-ज्यादा समय उपस्थित रहूंगा। युवाओं को सीधे हमारे सामने अपने आइडियाज को रखने का अवसर मिलेगा। देश इन आइडियाज को कैसे आगे लेकर जा सकता है? कैसे एक ठोस रोडमैप बन सकता है? इसका एक ब्लूप्रिंट तैयार किया जाएगा, तो आप भी तैयार हो जाइए, जो भारत के भविष्य का निर्माण करने वाले हैं, जो देश की भावी पीढ़ी हैं, उनके लिए ये बहुत बड़ा मौका आ रहा है।

पीएम मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में एनसीसी दिवस की देशवासियों को दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात के 116वें एपिसोड को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) दिवस की देशवासियों को शुभकामनाएं दी।

पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि साथियों, आज बड़ा ही खास दिन है। आज एनसीसी दिवस है। एनसीसी का नाम सामने आते ही हमें स्कूल-कॉलेज के दिन याद आ जाते हैं। मैं स्वयं भी एनसीसी कैडेट रहा हूं, इसलिए पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इससे मिला अनुभव मेरे लिए अनमोल है।

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा कि एनसीसी युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व और सेवा की भावना पैदा करती है। आपने अपने आस-पास देखा होगा, जब भी कहीं कोई आपदा होती है, चाहे बाढ़ की स्थिति हो, कहीं भूकंप आया हो, कोई हादसा हुआ हो, वहां मदद करने के लिए एनसीसी के कैडेट जरूर मौजूद हो जाते हैं।

उन्होंने कहा कि आज देश में एनसीसी को मजबूत करने के लिए लगातार काम हो रहा है। 2014 में करीब 14 लाख युवा एनसीसी से जुड़े थे। अब 2024 में, 20 लाख से ज्यादा युवा एनसीसी से जुड़े हैं। पहले के मुकाबले पांच हजार और नए स्कूल-कॉलेजों में अब एनसीसी की सुविधा हो गई है। सबसे बड़ी बात पहले एनसीसी में गर्ल्स कैडेट्स की संख्या करीब 25 के आस-पास ही होती थी और अब एनसीसी में गर्ल्स कैडेट्स की संख्या करीब-करीब 40 हो गई है। बॉर्डर किनारे रहने वाले युवाओं को ज्यादा से ज्यादा एनसीसी से जोडने का अभियान भी लगातार जारी है। मैं युवाओं से आग्रह करूंगा कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में एनसीसी से जुड़ें। आप किसी भी क्षेत्र में जाएं लेकिन एनसीसी से आपके व्यक्तित्व निर्माण में बड़ी मदद मिलेगी।

युवाओं को अनुशासन, नेतृत्व और देशभक्ति के मूल्यों के साथ आकार देने के इरादे से 1948 में एनसीसी की स्थापना की गई थी।

विश्व का सबसे बड़ा युवा संगठन राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) का आदर्श वाक्य एकता और अनुशासन है।

न्यूज अपडेट

उत्तर भारत में सुबह-शाम कंपकंपाने लगी सर्दी

नईदिल्ली/एजेंसी। उत्तरी भारत में कंपकंपा देने वाली सर्दी पडना शुरू हो गई है और नवंबर के अंत में तापमान में तेजी से गिरावट के चलते इसका असर और तेज होगा।कई राज्यों में कोहरा छाने से न्यूनतम तापमान 10 डिग्री तक जा पहुंचा।आज हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश में कोहरा छाने के आसार हैं।दूसरी तरफ मौसम विभाग ने अंडमान निकोबार द्वीप समूह में बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। पश्चिमी विक्षोभ कमजोर पडने के कारण दिल्ली में अधिकतम तापमान में उछाल देखने को मिल रहा है।शनिवार को अधिकतम तापमान बढ×कर 29.4 डिग्री पर पहुंच गया। यह सामान्य से 3 डिग्री ज्यादा है। दूसरी तरफ न्यूनतम तापमान 11.4 डिग्री रहा, जो सामान्य के बराबर है।

झारखंड के भाजपा कार्यकर्ताओं संग उनका ये मित्र हमेशा खड़ा रहेगाः हिमंत बिस्वा सरमा

गुवाहाटी/एजेंसी। झारखंड चुनाव सह प्रभारी और असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने भाजपा कार्यकर्ताओं के नाम एक वीडियो संदेश जारी किया है। उनका हौसला बढ़ाते हुए कहा है कि वो हर परिस्थिति में उनके साथ खड़े रहेंगे। इसके साथ ही सीएम ने बांग्लादेशी घुसपैठियों का मुद्दा उठाया।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उन्होंने कहा, झारखंड में मैंने पिछले 4 महीने बिताए। भारतीय जनता पार्टी के एक कार्यकर्ता के रूप में, पार्टी को मदद करने, साहस देने और मिलकर एक साथ चुनाव लडने के लिए हमलोगों ने भरपूर प्रयास किया। जो भी कारण हो। हम हमारे मकसद में कामयाब नहीं हो पाए। जब भी किसी काम में हम असफल होते हैं, तभी आने वाली सफलता की बुनियाद बनती है।

सीएम हिमंत ने आगे कहा, झारखंड के कार्यकर्ताओं को करीब से देखने का मुझे सौभाग्य मिला। मैं आज भी समझता हूं। घुसपैठियों की जो समस्या है वो आने वाले दिनों में झारखंड को बहुत ज्यादा क्षति पहुंचाने वाली है। मैं झारखंड की सरकार से निवेदन करूंगा कि आप घुसपैठियों को झारखंड से निकालने या कम से कम उनकी पहचान करिए। यह संविधान प्रदत्त जिम्मेदारी होती है। मेरा विश्वास है कि झारखंड की सरकार इस जिम्मेदारी को निभाएगी।

संभल में जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान बवाल, पुलिस पर पत्थरबाजी, वाहन फूंके

संभल/एजेंसी।

उत्तर प्रदेश के संभल में शाही जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान भीड़ ने पुलिस पर पथराव कर दिया है। इसके बाद पुलिसकर्मियों ने आंसू गैस के गोले दागे और लाठीचार्ज कर उपद्रवियों को खदेड़ा।मौके पर वरिष्ठ अधिकारियों समेत 5 थाने के पुलिस बल को तैनात किया गया है। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में बताई जा रही है और पुलिस ने मौके से कुछ उपद्रवियों को हिरासत में भी लिया है।

दरअसल, कोर्ट के आदेश पर एडवोकेट कमिश्नर मस्जिद के सर्वे के लिए पहुंचे थे। आज दूसरी बार मस्जिद का सर्वे हो रहा था। टीम करीब साढ़े 7 बजे मस्जिद में दाखिल हुई थी।इस दौरान मस्जिद के बाहर भीड़ जमा होने लगी और सर्वे को लेकर हंगामा शुरू कर दिया। अधिकारियों और मस्जिद के सदर ने भीड़ को शांत कराने की कोशिश की, लेकिन कुछ लोगों ने पथराव शुरू कर दिया और वाहनों को आग लगा दी। घटना पर उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने कहा, कोर्ट के आदेश पर संभल में सर्वे कराया जा रहा है। कुछ असामाजिक तत्वों ने पथराव किया है। मौके पर पुलिस और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद हैं। स्थिति नियंत्रण में है, पुलिस पत्थरबाजों की पहचान कर उचित कानूनी कार्रवाई करेगी।संभल एसपी ने कहा, भीड़ में कुछ लोग अचानक पथराव करने लगे। पुलिस ने समझाने का प्रयास किया तो पुलिस पर पथराव कर दिया।धारा-163 लगाई गई है।

हिंदू पक्ष का दावा है कि जिस जगह पर शाही जामा मस्जिद हैं, वहां श्री हरिहर मंदिर था। 19 नवंबर को हिंदू पक्ष ने जिला कोर्ट में वाद दायर किया था।इसके बाद कोर्ट ने एक हफ्ते के भीतर मस्जिद का सर्वे कर रिपोर्ट पेश करने को कहा। 19 नवंबर को पहला और आज दूसरा सर्वे हुआ।

असम के दीमा हसाओ जिले में भूकंप के हल्के झटके

गुवाहाटी/एजेंसी। असम के पर्वतीय दीमा हसाओ जिले में शनिवार रात भूकंप के हल्के झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 3.8 मापी गई। एक आपदा प्रबंधन अधिकारी ने बताया कि भूकंप दीमा हसाओ जिले और आसपास के इलाकों में रात करीब 11.05 बजे महसूस किया गया। जानमाल के नुकसान की तत्काल कोई सूचना नहीं है। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी (एनसीएस) के अनुसार, भूकंप के केंद्र सतह से 10 किलोमीटर की गहराई पर था।

असम में शनिवार को आया भूकंप पहाड़ी पूर्वोत्तर राज्यों में एक महीने से भी कम समय में आया छठा ऐसा भूकंप है।

इससे पहले 22 नवंबर को मणिपुर के बिष्णुपुर जिले और आसपास के इलाकों में रिक्टर पैमाने पर 3.6 तीव्रता का भूकंप आया था, जिसमें किसी तरह के नुकसान या हताहत होने की खबर नहीं है। इसका केंद्र सतह से 10 किलोमीटर की गहराई पर था।

अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमी कामेंग जिले और आसपास के इलाकों में 21 नवंबर को रिक्टर पैमाने पर 3.5 तीव्रता का भूकंप महसूस किया गया जिसका केंद्र सतह से पांच किलोमीटर की गहराई पर था।

सिक्किम की राजधानी गंगटोक और हिमालयी राज्य के आस-पास के इलाकों में 12 नवंबर को रिक्टर पैमाने पर 3.5 तीव्रता का हल्का भूकंप आया। उसी दिन असम के पहाड़ी जिले कार्बी आंगलोंग में 3.6 तीव्रता का भूकंप आया जिसका केंद्र सतह से 20 किलोमीटर की गहराई पर था। अरुणाचल प्रदेश के कामले और आस-पास के इलाकों में 28 अक्टूबर को रिक्टर पैमाने पर 4.3 तीव्रता का एक और भूकंप आया था जिसका केंद्र गहराई 10 किलोमीटर की गहराई पर था।

पहाड़ी पूर्वोत्तर क्षेत्र में कम से कम एक राज्य में हर हफ्ते भूकंप आता है, जिसमें अधिकांश झटके रिक्टर पैमाने पर तीन से चार तीव्रता के होते हैं। पहाड़ी पूर्वोत्तर राज्यों, खासकर असम, मिजोरम और मणिपुर में लगातार भूकंप से सार्वजनिक और निजी बिल्डरों को भूकंपरोधी संरचनाएं बनाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। भूकंप विज्ञानी पहाड़ी पूर्वोत्तर क्षेत्र को दुनिया का छठा सबसे अधिक भूकंप-संभावित क्षेत्र मानते हैं।

साल 1950 में रिक्टर पैमाने पर 8.7 की तीव्रता वाले भूकंप के कारण ब्रह्मपुत्र नदी का मार्ग बदल गया था, जो पूर्वोत्तर क्षेत्र के मुख्य वाणिज्यिक केंद्र, भीड़भाड़ वाले गुवाहाटी शहर से होकर गुजरती है।

आंध्र प्रदेश के अनंतपुर में आरटीसी बस-ऑटो की टक्कर, सात की मौत चार घायल

नई दिल्ली/एजेंसी। आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के गरल्डिने मंडल में थलागासपल्ले के पास एक आरटीसी बस और खेतिहर मजदूरों को ले जा रहे ऑटो के बीच टक्कर हो गई, जिसमें सात लोगों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए।

पुलिस के अनुसार, कुट्टलुरू मंडल के नेल्लुट्ला गांव के 12 किसान मजदूर गार्ल्डिने में काम करने के लिए एक ऑटो में सवार होकर गए थे। वापस लौटते समय विपरीत दिशा से आ रही आरटीसी बस ने उनकी गाड़ी को टक्कर मार दी। मृतकों में दो की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं अन्य दो की अस्पताल ले जाते समय मौत हो गई, जबकि अन्य तीन ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। घायलों का इलाज अनंतपुर सरकारी अस्पताल में जारी है। सूचना मिलने पर जिला एसपी जगदीश और डीएसपी वेंकटेश्वरुलु ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने आगे की जांच के लिए आरटीसी बस चालक को हिरासत में ले लिया है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने थलागासपल्ले में हुए इस दर्दनाक सड़क हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने इस दुर्घटना में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार पीड़ित परिवारों के साथ है।

पहली बार संसद पहुंचीं प्रियंका गांधी

लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने मारी बाजी, दोनों सीटों पर दर्ज की जीत

नईदिल्ली/एजेंसी।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन को करारी हार का सामना करना पड़ा. यही नहीं विधानसभा उपचुनाव में भी बीजेपी का जलवा देखने को मिला है. हालांकि लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने बाजी मार ली. इसी के साथ गांधी परिवार का एक और सदस्य सक्रिय राजनीति में शामिल हो गया.

पहली बार चुनावी मैदान में उतरीं प्रियंका गांधी केरल की वायनाड सीट पर हुए लोकसभा चुनाव में जीत हासिल कर सांसद पहुंच गई हैं. इसी के साथ गांधी परिवार के तीन सदस्य संसद सदस्य बन गए हैं. राहुल गांधी रायबरेली लोकसभा सांसद हैं तो वहीं सोनिया गांधी से राज्यसभा की सदस्य हैं अब प्रियंका गांधी भी लोकसभा चुनाव जीतकर संसद के निचले सदन की सदस्य बन गई हैं. केरल की वायनाड सीट पर हुए लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने जीत हासिल की है. वायनाड से प्रियंका गांधी पहली बार चुनाव मैदान में उतरी और जीत हासिल की. उन्होंने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के अपने निकटतम प्रतिद्वंदी सत्यन मोकेरी को चार लाख से ज्यादा वोटों से हरा दिया. जो 2024 के लोकसभा चुनाव में इसी सीट पर राहुल गांधी की जीत से कहीं ज्यादा है. वायनाड में प्रियंका गांधी को कुल 6 लाख 22 हजार 338 वोट मिले, जबकि सत्यन मोकेरी को दो लाख 11 हजार 407 मत प्राप्त हुए. बता दें कि इस साल हुए लोकसभा चुनाव चुनाव में राहुल गांधी केरल की वायनाड और यूपी की रायबरेली सीट से चुनाव जीते थे, बाद में उन्होंने वायनाड सीट छोड़ दी थी. जिसके चलते यहां उपचुनाव कराया गया. वहां महाराष्ट्र की नांदेड़ लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भी कांग्रेस बड़े ही नाटकीय ढंग से जीत हासिल करने में कामयाब रही. क्योंकि इस सीट पर आखिरी समय तक बीजेपी उम्मीदवार बढ़त बनाए हुए थे।

आज राज्यपाल से हेमंत सोरेन की मुलाकात, सरकार बनाने का दावा करेंगे पेश

रांची/एजेंसी। झारखंड विधानसभा चुनाव में भारी बहुमत से जीत हासिल कर लगातार दोबारा प्रदेश में गठबंधन की सरकार बनने जा रही है. इस जीत के साथ ही हेमंत सोरेन ने इतिहास रच दिया है. झारखंड में यह पहली बार होगा, जब लगातार कोई दोबारा प्रदेश में अपनी सरकार बनाने जा रहा है.

झारखंड के कुल 81 सीटों में से 56 पर इंडिया एलायंस ने अपना कब्जा समया तो वहीं, एनडीए को 24 सीटों पर जीत मिली. भारी बहुमत से जीतकर हेमंत सोरेन सरकार बनाने को तैयार हैं. जानकारी की मानें तो रविवार को हेमंत सोरेन राज्यपाल से मुलाकात कर सकते हैं.

24 नवंबर की सुबह 11 बजे मुख्यमंत्री आवास में हेमंत सोरेन इंडिया एलायंस के नव निर्वाचित विधायकों के साथ बैठक करेंगे, जिसमें कई अहम फैसले लिए जाएंगे. इस बैठक के बाद हेमंत सोरेन राज्यपाल से मुलाकात करेंगे और सरकार बनाने का दावा पेश करेंगे. इस मुलाकात से पहले सोरेन और कांग्रेस विधायकों की भी सुबह करीब 10.30 बजे मुलाकात करेंगे और कई फैसलों पर चर्चा करेंगे. बता दें कि झारखंड की कुल 81 सीटों पर दो चरणों में मतदान किया गया. पहले चरण का मतदान 13 नवंबर को और दूसरे चरण का मतदान 20 नवंबर को किया गया. पहले चरण में कुल 43 सीटों पर वोट डाले गए थे. वहीं, दूसरे चरण में कुल 38 सीटों पर मतदान किया गया. 23 नवंबर को चुनाव के नतीजे घोषित किए गए.

बॉलीवुड के अनकहे किस्से : यादें विलक्षण प्रतिभा के धनी गायक मोहम्मद रफी की

आज यानी 24 दिसंबर 2024 को मोहम्मद रफी का 101 वां जन्म दिवस है। उनकी आवाज का दीवाना केवल भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया थी, है और रहेगी। उनकी आवाज को ईश्वर की आवाज का दर्जा दिया गया। उनकी गायकी की रेंज और विविधता चौंकाने वाली है। गीत चाहे प्रेम के हों, विरह के हों, सुख-दुख के हों, देशभक्ति के हों, प्रार्थना के हों या शादी या विदाई के गीत। कव्वाली हो या भजन उन्होंने सबकुछ इस तरह डूब कर गया कि उसकी मिसाल किसी और गायक में पाना असंभव-सा लगता है। उनके बिना भारतीय संगीत के इतिहास का एक पन्ना भी लिख पाना मुश्किल होगा। 24 दिसंबर 1924 को अमृतसर, पंजाब के दूरदराज के छोटे-से गांव कोटला सुल्तान सिंह में उनका जन्म हुआ। अपने जीवन के शुरूआती वर्ष पंजाब में बिताने के कारण रफी साहब में पंजाबी बोली रची-बची थी। इसको दूर करने के लिए संगीतकार नौशाद और हुस्नलाल-भगतराम ने काफी कोशिश की और मोहम्मद रफी के प्रयास से जल्द ही सफलता भी पाई। बचपन से ही गाने के शौकीन रफी रोजगार की तलाश में 1941 में लाहौर पहुंचे जहां उनके पिता ढाबा चलाते थे। रफी एक नाई की दुकान पर काम करने लगे और शौकिया गाते भी रहे। आल इंडिया रेडियो में संगीत के कार्यक्रम अधिकारी जीवन लाल मट्टू के कहने पर मार्च 1944 में वे ऑल इंडिया रेडियो के लाहौर स्टेशन के ऑडिशन में सफल होकर एक रेडियो कलाकार बन गए। उनकी आवाज सुनकर 1943 में एक नए और उभरते हुए फिल्म संगीत निर्देशक श्याम सुंदर ने पंजाबी फिल्म गुल बलोच के लिए एक गीत- सोनिए नी, हीरिए नी, तेरी याद ने सताया- गया। लेकिन यह फिल्म सफल नहीं हो पाई। 1945 में रफी साहब दोस्तों के कहने पर बंबई आ गए। उन्होंने शुरूआत में कई फिल्मों के गीत गए लेकिन अब उनका कोई रिकॉर्ड नहीं है। उनको बड़ा ब्रेक मिला 1946 में दिलीप कुमार-नूरजहां की फिल्म जुगनू में। इसके संगीतकार थे फिरोज निजामी। नूरजहां जो इस फिल्म की हीरोइन भी थी, उनके साथ उनका पहला डुएट गीत था, यहां बदला वफा का बेवफाई के सिवा क्या है...। 1947 में रिलीज हुई इस फिल्म का यह गाना काफी लोकप्रिय हुआ और फिर उन्होंने मुड़कर नहीं देखा। इसके बाद गुलाम हैदर के संगीत में फिल्म शहीद (1948) के गीत, वतन की राह में वतन के नौजवान शहीद हों ...लोगों को इतना पसंद आया कि घर-घर में रफी की चर्चा होने लगी। रफी साहब की आवाज को फिल्मों में पसन्द किए जाने का एक कारण यह भी था कि चाहे वह किसी नायक के लिए गा रहे हों या फिर किसी कॉमेडियन के लिए या फिर किसी चरित्र अभिनेता के लिए वह सब पर अच्छी लगती थी। उनकी आवाज एक पीढ़ी के नायकों की आवाज बन गई थी। दर्द भरे गीत जो उन्होंने दिलीप कुमार के लिए गाए, मस्ती भरे गीत देवानंद या शम्मी कपूर के लिए या दुनिया पर तंज कसते राज कपूर के लिए या फिर प्रेम से भीगे गीत जुबली स्टार राजेंद्र कुमार के लिए वह उन सबकी स्वाभाविक आवाज में गाए हुए ही लगे। रफी साहब ने कभी नहीं चाहा कि वह बस नामी-गिरामी या बड़े अभिनेता के लिए ही गाएंगे। वे तो अपनी आवाज किसी को भी देने के लिए तैयार रहते, बस धुन अच्छी होनी चाहिए। गीत गाने से पहले वह कभी नहीं पूछते थे कि उसके लिए उनको कितना पैसा दिया जाएगा, दिया भी जाएगा या नहीं दिया जाएगा। उनकी सादगी के कारण उस समय में संगीत क्षेत्र में संघर्षरत अनेकों संगीत निर्देशक और गायकों को एक नया मुकाम हासिल हुआ। रफी ने अपने जीवन में 243 संगीत निर्देशकों के लिए लगभग 5,000 के आसपास फिल्मी गीत गाए। उन्होंने शंकर-जयकिशन के साथ सर्वाधिक सोलो गीत 216 को अपना स्वर दिया। इसके बाद नंबर आता है लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल का जिनके लिए 186 और फिर रवि का जिनके लिए 130 सोलो गीत गाए। रफी साहब ने सबसे ज्यादा सोलो गीत राजेंद्र कृष्ण के लिखे गाए 182, इसके बाद हसरत जयपुरी (173) और आनंद बक्शी (172) का नंबर आता है। उन्होंने सबसे ज्यादा युगल गीत (799) आशा भोंसले के साथ गाए। लता मंगेशकर के साथ 413 गीत और सुमन कल्याणपुर के साथ 142 गाए। पुरुषों में सबसे ज्यादा युगल गीत 58 मन्ना डे के साथ और किशोर कुमार के साथ 34 गीत गाए। प्रमुख अभिनेताओं में शम्मी कपूर के लिए उन्होंने 90 गाने गाए। जॉनी वॉकर के लिए 60 गीत, शशि कपूर के लिए 56, राजेंद्र कुमार के लिए 54, धर्मेंद्र के लिए 53 और देव आनंद के लिए 43 गीत गाए । दिलीप कुमार के लिए तो मात्र 34 गाने ही गाए। आज इस बात की बेहद हैरानी होती है कि फिल्मों के बेहद व्यावसायिक और गला काट प्रतियोगिता वाले पेशे में भी उन जैसा सच्चा इंसान कैसे अपना काम बेदाग ढंग से करता रह सका और फिल्म जगत के इतिहास में अपनी अनूठी जगह बना सका।

बिरयानी को पीछे छोड़ आईटी में आगे कैसे बढ़ा हैदराबाद

डॉ आर.के.सिन्हा

अगर आप देश के किसी छोटे-बड़े शहर या महानगर में रहते है, तब आपको मालूम होगा कि आपके अड़ोस-पड़ोस के कुछ नौजवान नौकरी करने के लिए हैदराबाद भी चले गए हैं। यह भी मुमकिन है कि आपके अपने घर-परिवार से भी कुछ बच्चे अब तक चारमीनार और बिरयानी के लिए मशहूर हैदराबाद शहर की किसी टेक या फार्मा सेक्टर की कंपनी में जाकर काम करने लगे हों। दरअसल हैदराबाद गुजरे बीस-पच्चीस सालों में दुनिया के आई टे सेक्टर के नक्शे के केंद्रबिंदु पर आ गया है। शायद ही दुनिया की कोई मशहूर आईटी कंपनी हो, जिसके ऑफिस तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में न हो । अगर आज हैदराबाद इस मुकाम पर पहुंचा है, तो इसका श्रे? आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू को तो देना ही होगा। वरिष्ठ लेखक दिनेश सी. शर्मा ने अपनी हाल ही में प्रकाशित किताब बियॉन्ड बिरयानीः द मेकिंग ऑफ ए ग्लोबलाइज्ड हैदराबाद ((बिरयानी से आगेः एक वैश्वीकृत हैदराबाद का निर्माण) में हैदराबाद के तेजी से बदले चेहरे की कहानी बयां की है। चंद्रबाबू नायडू ने आंध्र प्रदेश में अपने पूर्ववर्तियों द्वारा रखी गई ठोस वैज्ञानिक अनुसंधान और आर्थिक नींव का लाभ उठाया। हैदराबाद के आईटी पावर हाउस बनने से पहले ही यहां वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान के लिए वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएलएसआईआर) की तरफ से प्रयोगशालाएं स्थापित हो चुकी थीं। यहां से योग्य वैज्ञानिक देश-दुनिया को मिल रहे थे। इसी तरह से यहां इंडियन ड्रग्ज एंड फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड (आईडीपीएल) और इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंण्डिया लिमिटेड (ईसीआईएल) जैसे संस्थान भी पहले से थे। इनका लक्ष्य अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाना था। इन दोनों सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों ने तकनीकी जनशक्ति का एक बड़ा आधारसेतु विकसित कर दिया था, जिसने उद्यमियों के लिए नए क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिए आधार तैयार किया। देश में 1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण की हवा बहने लगी। लाइसेंस परमिट कोटा राज का बड़ी मुश्किल से ही सही , पर धीरे- धीरे अंत हुआ। इसके बाद 1993 में कर्नाटक सरकार ने दूसरे प्रौद्योगिकी एन्क्लेव के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी पार्क बनाने के लिए टाटा समूह और सिंगापुर स्थित कंपनियों को अपने साथ जोड़ा। उसे सफलता भी मिली। तब हैदराबाद में ऐसा कोई तकनीकी केंद्र विकसित नहीं हो पाया था। अब चंद्रबाबू

नायडू 1995 में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। वह हैदराबाद को सूचना प्रौद्योगिकी में बैंगलुरू को हराना चाहते थे। उन्होंने अपने सरकारी अफसरों को साफ कह दिया था कि हैदराबाद को सूचना प्रौद्योगिकी में लंबी- ऊंची छलांग लगानी है। हैदराबाद के पास इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए सब कुछ थाः तकनीकी जनशक्ति का एक बड़ा आधार, प्रौद्योगिकी क्षेत्र में काम कर रहे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम और अनुसंधान संस्थानों और उद्यमियों की एक श्रृंखला , जो जोखिम उठाने को तैयार थी। लेकिन , हैदराबाद में बुनियादी ढाँचे का अभाव था जैसे एक प्रौद्योगिकी एन्क्लेव, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति, अच्छी सड़कों का जाल और अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा। चंद्रबाबू नायडू की सरकार ने इन सब क्षेत्रों पर एक साथ काम किया और हैदराबाद की भारत और भारत से बाहर निवेशकों के बीच गंभीरता से मार्केटिंग भी की। उन्होंने विज्ञान पार्क मॉडल को अपनाया, जिसे पश्चिम के साथ-साथ दक्षिण कोरिया, ताइवान और मलेशिया जैसे पूर्वी एशियाई देशों में प्रौद्योगिकी आधारित आर्थिक विकास और विकास के मॉडल के रूप में सफलतापूर्वक आजमाया गया था। बेशक, चंद्रबाबू नायडू ने साबित कर दिखाया कि अगर आप में इच्छा शक्ति हो तो आप अपने प्रदेश या देश की किस्मत बदल सकते हैं। वह पहली बार लगभग तीन दशक पहले अविभाजित आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। उन्होंने अपने ससुर एनटी रामाराव को सत्ता से बेदखल कर दिया था। चंद्रबाबू नायडू ने अपनी इमेज एक उद्योग-समर्थक और प्रौद्योगिकी-समर्थक वाले नेता की बनाई । उन्होंने हैदराबाद को आईटी हब के रूप में स्थापित करने में दिन-रात की मेहनत की। राज्य का मुख्यमंत्री बनने के बाद वे माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स से मिले। उस मुलाकात के बाद से ही हैदराबाद बदलने लगा। वहां दुनिया भर की चोटी की आईटी कंपनियों ने अरबों रुपए का निवेश किया। बिल गेट्स किसी काम के लिए राजधानी दिल्ली में थे। चंद्रबाबू को पता चला कि गेट्स राजधानी में हैं। वह गेट्स से मिलने की कोशिश कर ही रहे ही थे। उनकी तरफ से अमेरिका एंबेसी के अधिकारियों से गुजारिश की गई कि उनकी (नायडू) गेट्स से मुलाकात करवा दी जाए। उन्हें बताया गया कि गेट्स बहुत व्यस्त हैं, और अगर वे सच में उनसे मिलने को इच्छुक हैं तो वे शाम को एँबेसी में आयोजित पार्टी में शामिल हो जाएं। वहां गेट्स मिलेंगे। वहां तय समय पर नायडू पहुंच गए , गेट्स से मिलने।

वहां दोनों मिले। नायडू ने एक लैपटॉप के माध्यम से गेट्स को प्रेंजटेशन दिया। इस तरह से प्रेजंटेशन देने वाले नायडू पहले भारत के नेता थे। यह सब देखकर गेट्स काफी प्रभावित हुए। इसके बाद हैदराबाद में माइक्रोसॉफ्ट का विकास केंद्र स्थापित हुआ। उसके बाद तो हैदराबाद और आंध्र प्रदेश में दर्जनों आईटी कंपनियों ने तगड़ा निवेश किया। खैर,हैदराबाद की बात होगी तो बिरयानी की चर्चा तो अवश्य ही होगी ही। दिनेश सी. शर्मा बियोंड बिरयानी में हैदराबादी बिरयानी की अखिल भारतीय स्तर पर लोकप्रियता को आर्थिक उदारीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण से जोड़कर देखते हैं। पिछले साल जोमेटो से हरेक सेंकिड 3.19 बिरयानी के ऑर्डर दिए गए। उधर स्विगी को हरेक सेंकिड 2.5 ऑर्डर मिले। इनकी कुल संख्या करोड़ों में है। इनमें सर्वाधिक ऑर्डर हैदराबादी बिरयानी के लिए थे। बीते दो-तीन दशकों के दौरान हैदराबाद की टेक और फार्मा कंपनियों में काम करने के लिए देशभर से नौजवान पहुंचने लगे। इसी तरह से हैदाराबादी भी अपने शहर से कामकाज के सिलसिले में बाहर निकले। इस तरह की दो-तरफा आवाजाही से हैदराबादी बिरयानी लोकप्रिय होती गई और बिरयानी बेचने वालों की चांदी हो गई। बिरयानी समोसे की तरह, मध्य एशिया से भारत आई। कहा यह भी जाता है कि केरल का मालाबार वह इलाका है जहां अरब व्यापारी सबसे पहले आए।वे अपने साथ बिरयानी भी लाए। बिरयानी अब हमारी हो चुकी है। हालांकि हैदराबादी बिरयानी के कद्रदान कहते हैं कि हैदराबादी बिरयानी के सामने मुरादाबादी, दिल्ली और मालाबर की बिरयानी को उन्नीस ही हैं। हैदराबादी बिरयानी में मसालेदार, पका हुआ चावल, मांस और नारियल और केसर का तड़का लगाया जाता है। अगर इसे कायदे से बनाए तो खाने वाले का पेट भर सकता है,पर नीयत नहीं। बहरहाल, हैदराबाद की पहचान अब सिर्फ बिरयानी भर से ही नहीं होती हैदराबाद अब आई टी का एक बड़ा केंद्र बनकर उभरा है ।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

शर्मनाक है 'विध्वंस' को महिमामंडित करना

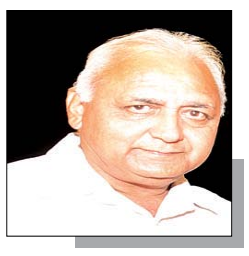

तनवीर जाफरी

साहित्य, मानवीय अभिव्यक्ति का एक ऐसा रूप है जो 'संस्कृति' का प्रसार करता है। साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा जाता है। साहित्यकार अपनी रचनाओं में समाज के विभिन्न पहलुओं को दशार्ते हैं। साहित्य, जीवन के प्रचलन के अनुसार गतिशील रहता है। गैर-काल्पनिक गद्य, काल्पनिक गद्य, कविता, नाटक, और लोक कथाएं आदि साहित्य के प्रमुख रूप हैं। साहित्यिक भाषा, किसी भाषा का वह रूप है जिसका उपयोग औपचारिक, अकादमिक, या विशेष रूप से विनम्र लहजे में लिखते समय किया जाता है। साहित्य समाज के मर्म का भी दर्पण है। यह साहित्य ही है जिसके द्वारा शब्दों के माध्यम से बड़े ही प्रभावी तरीके से अपनी बात कही और दूसरों तक पहुंचाई जाती है। हमारे देश में हिंदी व उर्दू साहित्य का एक सबसे प्रभावी नाम था मुंशी प्रेमचंद। उनके उपन्यासों व कहानियों में प्रायः गरीबी,सामाजिक अन्याय, सामाजिक व साम्प्रदायिक सद्भाव सहित तमाम मानवीय पहलुओं का जिक्र हुआ करता था। इसी तरह प्रेमचंद के समकक्ष अंग्रेजी साहित्य में भी ऐसे अनेक साहित्यकार हुये हैं जिन्होंने सामाजिक मुद्दों और यथार्थवाद को इसी तरह संबोधित किया। इनमें चार्ल्स डिकेंस को जहां गरीबों के संघर्षों के चित्रण और सामाजिक अन्याय की आलोचना के लिए जाना जाता है वहीँ विशेष रूप से ओलिवर ट्विस्ट और डेविड कॉपर फील्ड जैसी रचनाओं के लिये भी वे प्रसिद्ध हैं। इसी तरह मार्क ट्वेन के आख्यानों में अक्सर जाति और वर्ग के विषयों पर प्रकाश डाला जाता था, जैसा कि द एडवेंचर्स ऑफ हकलबेरी फिन में देखा गया है। वहीं टोनी मॉरिसन जोकि बेलव्ड जैसे उपन्यासों में अफ्रीकी अमेरिकी अनुभवों और सामाजिक मुद्दों की उनकी खोज प्रेमचंद के हाशिए पर पड़े समुदायों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ प्रतिध्वनित होती है। प्रेमचंद की ही तरह इन लेखकों ने भी अपने आख्यानों का उपयोग सामाजिक मानदंडों और अन्याय की आलोचना करने के लिए किया। लियो टॉल्स्टॉय ने भी प्रेमचंद के लेखन को प्रभावित किया। उन्होंने टॉल्स्टॉय की नैतिक कहानियों का हिंदी में अनुवाद किया, जिससे उन्हें "हिंदी टॉल्स्टॉय" की उपाधि मिली। इसी तरह गुस्ताव फ़्लोबर्ट की कथात्मक शैली भी प्रेमचंद के सामाजिक यथार्थवाद पर ध्यान केंद्रित करने के समान है। मैक्सिम गोर्की ने भी विशेष रूप से

निम्न वर्गों के संघर्षों के संबंध में प्रेमचंद के साथ विषयगत चिंताओं को साझा किया। इसी तरह शेक्सपियर हों या रविंद्र नाथ टैगोर,इन जैसे अनेक लेखकों व साहित्यकारों ने अपने लेखन में मानवीय संवेदनाओं का बखूबी जिक्र किया है। वैसे भी हमारा देश गांधी के सत्य अहिंसा के सिद्धांतों पर चलने वाले देश के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। इसलिये यहाँ हिंसा,विध्वंस,नफरत,विद्वेष,साम्प्रदायिकता तबाही बबार्दी जैसे अमानवीय पहलुओं की कोई गुंजाईश नहीं होनी चाहिये। परन्तु ब्रिटिश कंपनी जे सी बैमफोर्ड एक्सकेवेटर लिमिटेड (जेसीबी) की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी जेसीबी (इंडिया) जो ब्रिटिश कंजर्वेटिव पार्टी के सबसे प्रभावशाली दान दाताओं में से एक रही है, इसी जेसीबी कंपनी ने लेखकों के लिए एक साहित्य पुरस्कार की स्थापना की है। गौर तलब है कि यही जे सी बी कंपनी है जो इजराइली रक्षा मंत्रालय के साथ एक अनुबंध के तहत फिलिस्तीन में मकानों को ध्वस्त करने और अवैध इस्राईली बस्तियों के विस्तार के लिए जेसीबी बुलडोजर मुहैय्या करा रही है। इसी जे सी बी के बुलडोजर गजा में तबाही मचाये हुये हैं। भारत में भी सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद भले ही जे सी बी के बुलडोजरों द्वारा ढहाए जाने वाले भवनों की संख्या में अब विराम लग गया हो। परन्तु गत एक दशक से देश के खासकर भारतीय जनता पार्टी शासित अनेक राज्यों में सत्ता शक्ति का दुरूपयोग करते हुये धर्म व जाति-विशेष के लोगों को निशाना बनाया गया और शासन द्वारा अदालत की शक्तियों को अपनी हाथों में लेने की कोशिश की गयी, जिसने पूरे विश्व में मानवीय संवेदनाओं को झकझोर कर रख दिया। और इससे भी शर्मनाक बात यह है कि इसी विध्वंसकारी मशीन का भारत से लेकर अमेरिका तक इन्हीं दक्षिणपंथियों द्वारा महिमामंडन किया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर इस मशीन का विदेशों में प्रदर्शन किया गया। और हद तो तब हो गयी जब गाँधी के राज्य गुजरात में अप्रैल 2022 में तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ब्रिटिश जे सी बी कम्पनी का दौरा करते हैं और साथ ही बुलडोजर पर खड़े होकर फोटो कराते हैं। साथ ही अपने इसी दौरे में वे गाँधी जी के आश्रम में जाकर उनका चरखा भी चलाते हैं। सवाल यह है कि जो जे सी बी कंपनी भारतीय लेखकों की विविधता का जश्न मनाते हुए साहित्यिक पुरस्कार देने के घोषणा कर रही हो उसी कंपनी द्वारा ऐसी विध्वंसकारी मशीन का निर्माण व जनसंहारक उपयोग किया जाना जिससे कि वह दंड के रूप में लाखों लोगों के जीवन,उनके घरों व आजीविका को नष्ट करने में भागीदार हो, ऐसे दोहरेपन में आखिर 'साहित्यिक पुरस्कार' की क्या गुंजाईश ? यही वजह है कि भारतीय लेखकों सहित विश्व के सौ से अधिक उपन्यासकारों,लेखकों,कवियों,अनुवादकों और प्रकाशकों ने ब्रिटिश बुल्डोजर निमार्ता और एक साहित्यिक पुरस्कार की आयोजक कंपनी जेसीबी की आलोचना करते हुए एक खुला पत्र लिखकर साफ शब्दों में यह कहा है कि 'जेसीबी साहित्य पुरस्कार' कोई पुरस्कार नहीं बल्कि यह इस कंपनी का एक पाखंड है क्योंकि जेसीबी साहित्य पुरस्कार की घोषणा करने वाली यही कंपनी भारत और फिलस्तीन में गरीबों तथा हाशिये पर पड़े गरीब लोगों की जिंदिगी उजाड़ रही है और जो ह्यदंड के रूप में इतने सारे लोगों के जीवन और आजीविका को नष्ट करने में भागीदार है।

लेखकों ने पत्र में यह भी लिखा है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने विभिन्न राज्यों में मुसलमानों के घरों, दुकानों और उपासना स्थलों को ध्वस्त करने के लिए व्यवस्थित अभियान में लगातार जेसीबी बुलडोजर का इस्तेमाल किया है और इस परियोजना को ह्यबुलडोजर न्याय का नाम दिया गया है, जो बेहद परेशान करने वाला है। लेखकों ने अपने खुले पत्र में यह भी कहा है कि हम साहित्यिक समुदाय के समर्थन के ऐसे कपटपूर्ण दावों को बर्दाश्त नहीं करेंगे। यह पुरस्कार जेसीबी के हाथों पर लगे खून को नहीं धो सकता। भारत के उभरते लेखक इससे बेहतर पुरस्कार के हकदार हैं। कंपनी और पुरस्कार देने वालों की ओर से इस तरह का पाखंड निंदनीय है। इसे भारतीय साहित्य के लिए एक बहुत ही प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार के साथ जोड़कर हरगिज नहीं देखा जा सकता। न ही इस पुरस्कार का स्वतंत्र अभिव्यक्ति, विविधता और बहुलवाद को बढ़ावा देने से कोई लेना-देना है। मानवीय संवेदनाओं का सम्मान करने वाले लेखकों के लिये यह महत्वपूर्ण व जरूरी है कि वे मानवाधिकारों के इस घोर उल्लंघन के खिलाफ आवाज उठाएं। क्योंकि 'विध्वंस' को महिमामंडित करना शर्मनाक है।

चिंताजनक है महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा

अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस (25 नवंबर) पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

प्रतिवर्ष 25 नवंबर को महिलाओं पर होने वाली हिंसा को रोकने के लिए विश्वभर में ह्यअंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवसह्ण मनाया जाता है। इस दिन महिलाओं के विरुद्ध हिंसा रोकने के ज्यादा से ज्यादा प्रयास करने की आवश्यकता को रेखांकित करने वाले कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। तीन बहनों पैट्रिया मर्सिडीज मिराबैल, मारिया अर्जेंटीना मिनेर्वा मिराबैल तथा एंटोनिया मारिया टेरेसा मिराबैल द्वारा डोमिनिक शासक रैफेल ट्रुजिलो की तानाशाही का कड़ा विरोध किए जाने पर उस क्रूर शासक के आदेश पर 25 नवम्बर 1960 को उन तीनों की हत्या कर दी गई थी। वर्ष 1981 से उस दिन को महिला अधिकारों के समर्थक और कार्यकर्ता उन्हीं तीनों बहनों की मृत्यु की पुण्यतिथि के रूप में मनाते आए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 17 दिसम्बर 1999 को एकमत से हर साल 25 नवम्बर का दिन ही महिलाओं के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय हिंसा उन्मूलन दिवस के रूप में मनाने के लिए निर्धारित किया गया। सरकारों, निजी क्षेत्र और प्रबुद्ध समाज से यौन हिंसा और महिलाओं के उत्पीड़न के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाने का आग्रह करते हुए संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुतारेस का कहना है कि महिलाओं के प्रति हिंसा विश्व में सबसे भयंकर, निरन्तर और व्यापक मानव अधिकार उल्लंघनों में शामिल है, जिसका दंश विश्व में हर तीन में से एक महिला को भोगना पड़ता है। महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य करने के लिए वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा ह्यसंयुक्त राष्ट्र महिलाह्ण का गठन किया गया था। संयुक्त राष्ट्र महिला के आंकड़ों के अनुसार विश्वभर में 15-19 आयु वर्ग की करीब डेढ़ करोड़ किशोर लडकियां जीवन में कभी न कभी यौन उत्पीड़न का शिकार होती हैं,

करीब 35 फीसदी महिलाओं और लड़कियों को अपने जीवनकाल में शारीरिक एवं यौन हिंसा का सामना करना पड़ता है, हिंसा की शिकार 50 फीसदी से अधिक महिलाओं की हत्या उनके परिजनों द्वारा ही की जाती है, वैश्विक स्तर पर मानव तस्करी के शिकार लोगों में 50 फीसदी व्यस्क महिलाएं हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रतिदिन तीन में से एक महिला किसी न किसी प्रकार की शारीरिक हिंसा का शिकार होती है। महिलाओं को हिंसा और दुर्व्यवहार की भारी कीमत चुकानी पड़ती है, जो जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं और लड़कियों की भागीदारी के अधिकार को बाधित करता है, उन्हें उनके बुनियादी अधिकारों और स्वतंत्रता से वंचित करता है। इससे आर्थिक सुधार और सतत विकास में खलल पड़ता है।

भारत के संदर्भ में महिला हिंसा को लेकर आंकड़ों पर नजर डालें तो स्थिति काफी चिंताजनक है। हालांकि 2012 में दिल्ली में हुए निर्भया कांड के बाद देशभर में सड़कों पर महिलाओं के आत्मसम्मान के प्रति जिस तरह की जन-भावना और युवाओं का तीखा आक्रोश देखा गया था, यौन हिंसा रोकने के लिए जिस प्रकार कानून सख्त किए गए थे, उसके बाद लगने लगा था कि समाज में इससे संवदेनशीलता बढ़ेगी और ऐसे कृत्यों में लिप्त असामाजिक तत्वों के हौंसले पस्त होंगे किन्तु विड़म्बना है कि समूचे तंत्र को झकझोर देने वाले निर्भया कांड और उसके बाद के वर्षों में सामने आ चुके महिला अपराधों के कई अन्य जघन्य मामलों के बाद भी हालात यह हैं कि कोई दिन ऐसा नहीं बीतता, जब महिला हिंसा से जुड़े अपराधों के मामले देश के कोने-कोने से सामने न आते हों। होता सिर्फ यही है कि जब भी कोई बड़ा मामला सामने आता है तो हम पुलिस-प्रशासन को कोसते हुए संसद से लेकर सड़क तक कैंडल मार्च निकालकर या अन्य किसी प्रकार से विरोध प्रदर्शन कर रस्म अदायगी करके शांत हो जाते हैं और पुनः तभी जागते हैं, जब ऐसा ही कोई बड़ा मामला पुनः सुर्खियां बनता है, अन्यथा महिला हिंसा की छोटी-बड़ी घटनाएं तो बदस्तूर होती ही रहती हैं। ऐसे अधिकांश मामलों में प्रायः पुलिस-प्रशासन का भी गैरजिम्मेदाराना और लापरवाही भरा रवैया ही सामने आता रहा है। प्रश्न यही है कि निर्भया कांड के बाद कानूनों में सख्ती, महिला सुरक्षा के नाम पर कई तरह के कदम उठाने और समाज में आधी दुनिया के आत्मसम्मान को लेकर बढ़ती संवेदनशीलता के बावजूद आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि बलात्कार के मामले हों या छेड़छाड़ अथवा मयार्दा हनन या फिर अपहरण अथवा क्रूरता, ह्यआधी दुनियाह्ण के प्रति अपराधों का सिलसिला थम नहीं रहा है? इसका एक बड़ा कारण तो यही है कि कड़े कानूनों के बावजूद असामाजिक तत्वों पर वो कड़ी कार्रवाई नहीं होती, जिसके वे हकदार हैं और इसके अभाव में हम ऐसे अपराधियों के मन में भय पैदा करने में असफल हो रहे हैं। कोलकाता की महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार और नृशंस हत्या का मामला हो या हैदराबाद की बेटी दिशा का या उन्नाव पीड़िता का अथवा हाथरस या बुलंदशहर की बेटियों का, लगातार सामने आते ऐसे तमाम मामलों से स्पष्ट है कि केवल कानून कड़े कर देने से ही महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध थमने वाले नहीं हैं। इसके लिए सबसे जरूरी है कि तमाम सरकारें प्रशासनिक मशीनरी को चुस्त-दुरूस्त करने के साथ ऐसे अपराधों के लिए प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करें और ऐसे मामलों में कोताही बरतने वाले जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएं।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

आरआईसी में वरिष्ठ पत्रकार मिलापचंद डंडिया का अभिनंदन

डंडिया की कलम ने सच को सच कहने की हिम्मत दी : राज्यपाल कटारिया

पंजाब के राज्यपाल कटारिया, विधानसभा अध्यक्ष देवनानी, पूर्व विस अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी, विधायक गोपाल शर्मा और वरिष्ठ पत्रकार प्रवीणचंद्र छाबड़ा ने किया डंडिया का सम्मान

चमकता राजस्थान

जयपुर। झालाना डूंगरी स्थित राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में रविवार को वरिष्ठ पत्रकार मिलापचंद डंडिया का अभिनंदन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि पंजाब के राज्यपाल कटारिया रहे और विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने अध्यक्षता की। जबकि विशिष्ट अतिथि पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी, वरिष्ठ पत्रकार प्रवीणचंद्र छाबड़ा रहे।

कार्यक्रम संयोजक सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा ने बताया कि मंचासीन अतिथियों ने 93 वर्षीय डंडिया के पत्रकारिता जीवन के अमृतोत्सव (75 वर्ष पूर्ण होने पर) अभिनंदन ग्रंथ का लोकार्पण भी किया। इसके बाद बजरंग सिंह शेखावत द्वारा हस्तलिखित सम्मान पत्र को डंडिया को समर्पित किया गया। सम्मान पत्र का वाचन वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र बोड़ा ने किया। वहीं, बीबीसी के पूर्व भारत प्रमुख संजीव श्रीवास्तव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के शुभकामना संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र शर्मा हंस ने किया। इससे पूर्व पद्मश्री से अलंकृत उस्ताद अहमद हुसैन और उस्ताद मोहम्मद हुसैन बंधुओं ने गणेश वंदना और मां शारदा की स्तुति के साथ समारोह की शुरुआत की। अभिनंदन समारोह में बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन, पत्रकार और पत्रकारिता के विद्यार्थी शामिल हुए। इस अवसर पर मिलापचंद डंडिया ने अभिनंदन समारोह के लिए पत्रकार जगत का आभार व्यक्त किया। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी, लोकसभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष और अभिनंदन समिति के संयोजक गोपाल शर्मा के प्रति कृतज्ञता जाहिर की। साथ ही नवोदित और युवा पत्रकारों को जजमेंट शिप के बजाय खोजपूर्ण सत्य और तथ्य आधारित पत्रकारिता को प्राथमिकता देने की नसीहत दी।

डंडिया की कलम ने सच को सच कहने की हिम्मत दी : राज्यपाल कटारिया

अभिनंदन समारोह में पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि मिलापचंद डंडिया की पत्रकारिता का मैं प्रत्यक्षदर्शी रहा हूं। हम चाहे सत्ता में रहे हों या विपक्ष में डंडिया को सदैव सच्ची लेखनी के लिए याद करते हैं। इन्होंने राजस्थान के पत्रकारों को सच को सच कहने की हिम्मत दी। इन्होंने वे खबरें प्रकाशित जो जनहित में जरूरी थी। इनकी बेबाक लेखनी के कारण ही आज मंच और सभागार में इतनी बड़ी संख्या में पत्रकार एकजुट हैं और सभी राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व भी हो रहा है। हम सभी इनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु जीवन की कामना करते हैं।

डंडिया व्यक्ति नहीं विचार हैं : देवनानी

राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि राजस्थान के वरिष्ठतम पत्रकार के अभिनंदन समारोह में उपस्थित होना गौरव का विषय है। यह अभिनंदन किसी व्यक्ति विशेष का नहीं है, बल्कि यह एक विचार का अभिनंदन है। कला और संस्कृति की जीती जागती ज्योति का अभिनंदन है। मिलापचंद डंडिया राजस्थान की विशिष्ट धरोहर हैं। यह अभिनंदन समारोह संपूर्ण पत्रकारिता क्षेत्र का सम्मान है। मुझे व्यक्तिगत रूप से इस बात का गर्व है कि मुझे ऐसे व्यक्ति के अभिनंदन के लिए समारोह समिति का अध्यक्ष बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

डंडिया का जीवन ही पत्रकारिता का पाठ्यक्रम : डॉ सीपी जोशी

समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी ने कहा कि डंडिया का पूरा पत्रकारीय जीवन सख्त अनुशासन के साथ सच्चाई के प्रति कटिबद्ध रहते हुए बीता है। इसके हम सभी गवाह हैं। नए पत्रकारों के लिए तो इनका जीवन ही विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के समान है। उन्होंने कभी पक्ष- विपक्ष, मंत्री या मुख्यमंत्री की परवाह नहीं की और सदैव सच्चाई को प्रखरता से पेश किया। डंडिया की पत्रकारिता वर्तमान पीढ़ी के लिए आदर्श है।

डंडिया के बिना खोजपूर्ण पत्रकारिता का इतिहास अधूरा : गोपाल शर्मा

कार्यक्रम संयोजक सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा ने कहा कि मिलापचंद डंडिया की पत्रकारिता के 75 वर्षों की यात्रा का उल्लेख किए बिना राजस्थान की खोजपूर्ण पत्रकारिता का इतिहास अधूरा है। डंडिया ने राजस्थान की पत्रकारिता का हर दौर देखा है और हर मुकाम पर सक्रिय दिखाई दिए हैं। वे पत्रकारों की उस टोली के अग्रनायक हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कलम की धमक को महसूस करवाया। बेबाकी, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा उनकी पहचान है। पूर्व भैरोंसिंह शेखावत को डंडिया की सत्यनिष्ठा पर इतना विश्वास था कि वे हमेशा कहते थे कि उनके जीवन पर पुस्तक सिर्फ डंडिया ही लिख सकते हैं। उन्हें कभी पत्रकारिता के सिद्धांतों से समझौता करते नहीं देखा गया। उन्होंने जो कुछ लिखा, पूरा जोर लगाकर दम से लिखा और किसी विषय को लेकर अगर ठन गई तो बस ठन गई... फिर कभी हथियार नहीं डाले। अपनी निर्भीक कर्तव्यनिष्ठा के कारण उन्हें कई बार नुकसान भी उठाना पड़ा लेकिन वे कर्तव्य पथ से डिगे नहीं।

डंडिया का जीवन ही पत्रकारिता का पाठ्यक्रम : डॉ सीपी जोशी

समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी ने कहा कि डंडिया का पूरा पत्रकारीय जीवन सख्त अनुशासन के साथ सच्चाई के प्रति कटिबद्ध रहते हुए बीता है। इसके हम सभी गवाह हैं। नए पत्रकारों के लिए तो इनका जीवन ही विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के समान है। उन्होंने कभी पक्ष- विपक्ष, मंत्री या मुख्यमंत्री की परवाह नहीं की और सदैव सच्चाई को प्रखरता से पेश किया। डंडिया की पत्रकारिता वर्तमान पीढ़ी के लिए आदर्श है।

संक्षिप्त समाचार

निर्भय सिंह कुंदेर राष्ट्रीय किसान यूनियन अराजनैतिक संगठन के जिला उपाध्यक्ष नियुक्त

चमकता राजस्थान। भरतपुर (राजवीर सिंह) राष्ट्रीय किसान यूनियन अराजनैतिक संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष महिपाल तोमर एवं संगठन मंत्री अर्जुन सिंह और राजस्थान प्रभारी डॉ नरेश मदेरणा के निर्देश अनुसार कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए निर्भय सिंह कुंदेर को जिला उपाध्यक्ष भरतपुर के पद पर मनोनीत किया गया है। अपने क्षेत्र के किसान भाइयों को समस्या के लिए संघर्षरत रहते हुए उनकी समस्याओं के समाधान हेतु निरन्तर प्रयास करते हुए राष्ट्रीय किसान यूनियन की लोकप्रियता को किसानों में बनाएं रखेंगे। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष निर्भय सिंह कुंदेर ने शीर्ष राष्ट्रीय नेतृत्व का आभार जताया है।

बाडी में किड्स पैराडाइज स्कूल में आयोजित आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स प्रतियोगिता, बच्चों की प्रतिभा की हुई सराहना

चमकता राजस्थान। धौलपुर रामदास तरुण। बाडी कस्बे के प्रमुख अंग्रेजी माध्यम किड्स पैराडाइज स्कूल में आज आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बाडी के सभी स्कूलों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने कलरफुल क्ले और पेपर से आकर्षक कला कृतियाँ बनाई, जिनमें बाल गणेश, गुलाब, नरेंद्र मोदी, नन्हे कृष्ण, इंद्रधनुष जैसी शानदार मूर्तियाँ शामिल थीं, प्रतियोगिता में कक्षा तीन से दस तक के लगभग 190 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इसके साथ ही, बीते रविवार आयोजित हस्त लेखन प्रतियोगिता में भी विजेताओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सतीश प्रजापति (जिला मंत्री, प्रजापति समाज) और रामू चौधरी (वन्यजीव प्रेमी) ने बच्चों को पुरस्कृत किया। किड्स पैराडाइज स्कूल के निदेशक सुनील मित्तल ने बताया कि उनका उद्देश्य बच्चों की छिपी हुई, प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना और बाडी का नाम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रोशन करना है। आने वाले रविवार, 1 दिसंबर 2024 को निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसका विषय स्मोबाइल और सोशल मीडिया का बच्चों की पढ़ाई और नैतिक जीवन पर दुष्प्रभावस्र रहेगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्कूल के शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

उदयपुर जिले में थाना अम्बामाता पुलिस की कार्रवाई

साइबर ठगी के दो मामलों में पीड़ितों से ठगी गई रकम में से 8.23 लाख रुपए किए रिकवर

चमकता राजस्थान

जयपुर/उदयपुर! (खलील कुरैशी) 24 नवंबर। उदयपुर में साइबर ठगी के दो अलग-अलग मामलों में जिले की अम्बामाता थाना पुलिस ने ठगी गई रकम में से 8.23 लाख रुपए की रिकवरी की है। ठगों ने पीड़ित एक व्यक्ति का मोबाइल हैक कर बैंक खाते से आरटीजीएस के जरिए 10 लाख रुपए का ट्रांसफर कर लिए जबकि दूसरे पीड़ित को खाद-बीज की डीलरशिप देने का झांसा दे 50 हजार रुपये की ठगी की गई थीएसपी योगेश गोयल ने बताया कि अम्बामाता थाना क्षेत्र निवासी पीड़ित अर्पित आमेटा का अज्ञात साइबर हैकर ने मोबाइल हैक कर आरटीजीएस के जरिये उसके बैंक खाते से ऑनलाइन 10 लाख रुपए ट्रांसफर कर लिए वही एक अन्य पीड़ित लक्ष्मण सिंह द्वारा खाद बीज की डीलरशिप के लिए गूगल पर सर्च किया था। उसके बाद एक अज्ञात नंबर से उसके पास कॉल आया। कॉल करने वाले ने कंपनी का रिलेशनशिप मैनेजर बता डीलरशिप लेने के लिए उससे 50 हजार ऑनलाइन ट्रांसफर करा लिए।एसपी गोयल ने बताया कि एसएचओ हनवन्त सिंह राजपुरोहित एवं कांस्टेबल राजकमल बिश्नोई द्वारा पीड़ित अर्पित आमेटा के खाते की आरटीजीएस डिटेल प्राप्त कर विभिन्न बैकों के नोडल अधिकारियों से सम्पर्क कर खाते से निकली रकम में से 7 लाख 73 हजार रूपये को होल्ड करवा बदमाशों के खातों से पुनः रिकवर कराये।पीड़ित लक्षमण सिंह के साथ हुए साईबर फ्रॉड के सम्बंध में अनुसंधान में रकम किस बैंक खाते में गयी, उसकी डिटेल प्राप्त कर बैंक के नोडल अधिकारियों से सम्पर्क किया गया। फ्राड की राशि को होल्ड करवाकर सम्पूर्ण रकम पुनः रिकवर कर पीड़ित को राहत दिलाई गईथानाधिकारी डॉ हनवंत सिंह राजपुरोहित व साईबर एक्सपर्ट कांस्टेबल राजकमल बिश्नाई ने बताया की साइबर फ्रॉड से बचने के लिए अपने सोशल मीडिया अकाउण्ट, जीमेल आईडी, पेटीएम व बैक यूपीआई के मजबूत पासवर्ड बनाएं और उन्हें बार-बार बदलते रहें। सुरक्षित इंटरनेट कनेक्शन का इस्तेमाल करें, फिशिंग ईमेल से सावधान रहें, अज्ञात लिंक या पॉप-अप पर क्लिक न करें, सोशल मीडिया पर अपनी जानकारी किसी अनजान व्यक्ति से शेयर न करें, साथ ही अपने डिवाइस को किसी अनजान व्यक्ति के साथ शेयर ना करे।

डॉ. भीमराव अंबेडकर जाटव विकास समिति बसेड़ी का अध्यक्ष पद का चुनाव, रोशन नेताजी निर्विरोध चुने गए

चमकता राजस्थान

धौलपुर राजस्थान तरुण। जिला धौलपुर के बसेड़ी उपखण्ड में आज डॉ. भीमराव अंबेडकर जाटव विकास समिति के अध्यक्ष पद का चुनाव छीतरिया लाल की अध्यक्षता में सर्व समाज के समक्ष सम्पन्न हुआ। इस चुनाव में रोशन नेताजी अतरसूमा को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। इसके बाद समिति की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह अतरसूमा गांव में धूमधाम से आयोजित किया गया, जिसमें सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।समिति की नई कार्यकारिणी में बनवारी लाल (पूर्व सरपंच) को अध्यक्ष, राजीवर सिंह (रिटायर्ड अध्यापक) को सचिव, अमर सिंह (अध्यापक) को कोषाध्यक्ष, बिजेंद्र सिंह (पूर्व एसडीएम) को सलाहकार, बद्री सिंह (पूर्व प्रधान), छीतरिया लाल (पूर्व विधानसभा प्रत्याशी), ओमप्रकाश (अध्यापक) को संरक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। इसके अलावा अन्य सदस्य के रूप में रामलाल कौशल, बाबूलाल टेलर्स, ओम प्रकाश कैन, राजेंद्र सिंह, रामफुल, रतिराम एडवोकेट, भगवान सिंह, हजारीलाल (मीडिया प्रभारी) सहित कई अन्य सम्मानित कार्यकर्ताओं को भी जिम्मेदारियां सौंपी गईं। समारोह में समिति के विभिन्न कार्यों और भविष्य की योजनाओं पर भी चर्चा की गई, जिसमें सामाजिक उत्थान और विकास के लिए मिलजुल कर काम करने का संकल्प लिया गया।

चित्तौड़गढ़ जिले में थाना कोतवाली निम्बाहेड़ा पुलिस की कार्रवाई

दस हजार रुपये का ईनामी व सदर थाने का हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

चमकता राजस्थान

- **हत्या के आरोप में जेल में बंद आरोपी अंतरिम जमानत से हो गया था फरार**

जयपुर/चित्तौड़गढ़,! (खलील कुरैशी) 24 नवम्बर। चित्तौड़गढ़ में डेढ़ वर्ष पूर्व निम्बाहेड़ा कस्बे में विनोद कीर का अपहरण कर हत्या करने के मामले में न्यायिक हिरासत से अंतरिम जमानत से फरार आरोपी को थाना कोतवाली निम्बाहेड़ा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। सदर थाना क्षेत्र के गणेशपुरा गिरफ्तार आरोपी सुरेन्द्र उर्फ शेरू कीर पुत्र मांगीलाल (42) थाना सदर का हिस्ट्रीशीटर व दस हजार रुपये का ईनामी भी था।एसपी सुधीर जोशी ने बताया कि गत वर्ष मई माह में कोतवाली निम्बाहेड़ा थाना क्षेत्र के कल्याणपुरा के विनोद कीर का अपहरण कर उसकी हत्या करने के मामले में थाना पुलिस ने आरोपी सुरेन्द्र उर्फ शेरू कीर को गिरफ्तार किया था। जिसे सम्पूर्ण अनुसंधान के बाद न्यायिक हिरासत में भेजा गया। कोर्ट के आदेश से आरोपी को 20 दिवसीय अंतरिम जमानत पर रिहा किया गया था। जिसे 02 मार्च को पुनः उप कारागृह निम्बाहेड़ा में उपस्थित होना था, लेकिन फरार हो गया। जिसकी तलाशी व गिरफ्तारी के लिए उनके कार्यालय से दस हजार रुपये के ईनाम की घोषणा की गई थी।फरार आरोपी की गिरफ्तारी के लिये एएसपी सरिता सिंह व डीएसपी निम्बाहेड़ा बद्री लाल राव के निर्देशन में थानाधिकारी कोतवाली निम्बाहेडा सुमेर मीणा द्वारा अनुसंधान अधिकारी एएसआई सूरज कुमार, हैड कांस्टेबल भूपेंद्र सिंह व कानिस्टेबल रणजीत, देवेन्द्र, रामकेश, जगदीश, विरेन्द्र की टीम गठित की गई। टीम प्रभारी सूरज कुमार को सूचना मिली कि सुरेन्द्र उर्फ शेरू कीर हमीरगढ के पास देवनारायण हॉटल पर आया हुआ है, जिसने दाढ़ी मुझ बढ़ा रखी होकर सफेद रंग की टी-शर्ट व जीन्स की पेन्ट पहने हुये है।

सूचना पर पुलिस टीम अविलम्ब हॉटल देवनारायण हमीरगढ पहुंच फरार आरोपी सुरेन्द्र उर्फ शेरू कीर को गिरफतार कर थाने पर लाये। आरोपी की गिरफतारी मे भीलवाड़ा जिले के थाना हमीरगढ के हैड कांस्टेबल भुपेन्द्र सिंह व कांस्टेबल श्रवण कुमार का भी योगदान रहा ।हिस्ट्रीशीटर सुरेंद्र उर्फ शेरू कीर पर चित्तौडगढ जिले व अन्य जिलो मे दर्जन भर से भी अधिक मुकदमे लडाई झगडा, डराने धमकाने, लूट , हत्या, व आर्म्स एक्ट तथा एनडीपीएस एक्ट के दर्ज है। पुलिस थाना सदर चित्तौड़गढ़ का हिस्ट्रीशीटर होकर पुलिस थाना सदर चित्तौड़गढ़ में फिरौती मांगने, भीलवाड़ा कोतवाली मे हथियार सप्लाई करने के मामले में भी वांछित चल रहा है। पुलिस ने आरोपी को गिरफतार करने के लिये पिछले 8 महीनों मे राजस्थान व मध्यप्रदेश मे करीब 100 से भी ज्यादा संदिग्ध ठिकानो पर दबिश देकर तलाश किया।

संक्षिप्त समाचार

'श्रीमद्भगवत गीता, सनातन जय घोष' पर राजस्थान विश्वविद्यालय में व्याख्यान आज

- **अंतर्राष्ट्रीय संत गीता मनीषी ज्ञानानंद महाराज करेंगे संबोधित**

चमकता राजस्थान/जयपुर । श्रीमद्भगवत गीता, सनातन जय घोष₹ पर राजस्थान विश्वविद्यालय में आज सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय संत गीता मनीषी ज्ञानानंद महाराज संबोधित करेंगे । आयोजन के संयोजक योगाचार्य योगी मनीष ने बताया कि जीओ गीता परिवार एवं सर्वमंगलाए सनातन धर्म फाउंडेशन द्वारा सोमवार 4: 15 बजे राजस्थान विश्वविद्यालय के मानविकी पीठ सभागार में पूज्य गुरुदेव महामंडलेश्वर गीता मनीषी ज्ञानानंद जी महाराज के श्रीमुख से 'श्रीमद्भगवत गीता सनातन जय घोष' विषय पर व्याख्यान एवं सार्वजनिक अभिनंदन समारोह आयोजित होगा जिसमें जनप्रतिनिधियों, सनातन गीता प्रेमी संगठनों, योग प्रशिक्षण केंद्रों, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, शिक्षण संस्थानो के साथ-साथ विद्यार्थियों द्वारा महाराज श्री के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता अभिव्यक्ति स्वरूप सार्वजनिक अभिनंदन किया जाएगा।

रविवार को समारोह स्थल मानवीकी पीठ सभागार, राजस्थान विश्वविद्यालय में आयोजन के संयोजक योगी मनीष, समन्वय समिति के संयोजक पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी डी.पी. गुप्ता, फिल्म निर्देशक अशोक हिंदुस्तानी, श्री योग से योगाचार्य नीरज, सेल्यूट तिरंगा के प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट मदन मोहन पालीवाल, सेवा सुख संस्थान के संस्थापक चंद्रेश शर्मा सहित संयोजक टीम के सदस्यों ने तैयारीयो को अंतिम रूप दिया !

'संगठन पर्व जिला कार्यशाला' के तहत कंचनपुर मंडल में बैठक, सदस्यता अभियान को मिली प्राथमिकता

चमकता राजस्थान/जयपुर। बाड़ी उपखण्ड के कंचनपुर मंडल की बैठक ₹संगठन पर्व जिला कार्यशाला₹ के तहत आज गांव बड़ापुरा स्थित माता जी के मंदिर पर मंडल अध्यक्ष राम प्रसाद गोस्वामी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि धर्मेंद्र सिंह कंसाना (जिला अध्यक्ष, किसान मोर्चा), रितेश सक्सेना (सोशल मीडिया प्रभारी, करौली- धौलपुर लोकसभा), कल्पना शर्मा (महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष), रामवीर सिंह त्यागी (जिला उपाध्यक्ष, भाजपा) सहित कई अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।मंडल अध्यक्ष राम प्रसाद गोस्वामी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी को बैठक के उद्देश्यों के बारे में बताया और संगठन को मजबूत करने के लिए सक्रिय सदस्यता अभियान में भाग लेने की अपील की। मुख्य अतिथि धर्मेंद्र सिंह कंसाना ने कार्यशाला में संगठन की सदस्यता प्रक्रिया और आगामी चुनावी रणनीतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। रितेश सक्सेना ने कार्यकर्ताओं से भाजपा संगठन को मजबूत करने के लिए एकजुट होकर अधिक से अधिक सक्रिय सदस्य बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष कल्पना शर्मा ने ऑनलाइन और ऑफलाइन सदस्यता अभियान के महत्व पर चर्चा की। बैठक में मंडल उपाध्यक्ष रणवीर सिंह परमार, राजवीर सिंह राणा, शक्ति केंद्र संयोजक सुभाष तोमर, ओबीसी मोर्चा मंडल अध्यक्ष केदार कुशवाह, मंडल कोषाध्यक्ष जितेंद्र गोस्वामी सहित अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

अज्ञात वाहन की चपेट से बाइक सवार दम्पत्ति घायल, पत्नी को किया रैफर

- **नदबई-डहरा रोड़ पर बैलारा के समीप हादसा, अज्ञात वाहन चालक मौके से फरार**

चमकता राजस्थान। नदबई,(राजवीर सिंह)। नदबई-डहरा रोड पर गांव बैलारा के समीप अज्ञात वाहन की चपेट से बाइक सवार दम्पत्ति घायल हो गए। ग्रामीणों ने 108 एम्बूलेंस की सहायता से घायल दम्पत्ति को उपजिला चिकित्सालय में भर्ती कराया। बाद में घायल महिला को जिला चिकित्सालय रैफर कर दिया। गांव बाजीतपुरा निवासी निरोती जाटव पुत्र सोनपाल जाटव अपनी पत्नी माया देवी को बाइक पर लेकर बांसी जा रहा। इसी दौरान गांव बैलारा के समीप अज्ञात वाहन की चपेट से बाइक सवार दम्पत्ति घायल हो गई। बाद में घायल महिला को गंभीर स्थिति होने पर उपजिला चिकित्सालय से जिला चिकित्सालय रैफर कर दिया गया। उधर, हादसे के बाद अज्ञात वाहन चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया।

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के शल्य तंत्र विभाग द्वारा निशुल्क शिविर का किया गया आयोजन

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी)। जोरावर सिंह गेट स्थित राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान मानद विश्विद्यालय में वर्ल्ड पाइल्स डे पर शिविर का आयोजन किया गया। निशुल्क शिविर का आयोजन शल्य तंत्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के अस्पताल की ओपीडी संख्या 28 में 18 नवम्बर से 23 नवम्बर तक आयोजित किया गया। शल्य तंत्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर पी हेमंत कुमार ने बताया कि आज की बदलती जीवनशैली और खानपान के कारण पाइल्स रोगियों की संख्या बहुत बढ़ रही है। शिविर में आमजन को आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति से ईलाज करने के साथ दवाइयां दी गई। शिविर में प्रो. अशोक कुमार, प्रो. सुमन शर्मा, प्रो. नरिंदर सिंह, डॉ. बी. स्वप्ना, डॉ. मनोरमा सिंह एवं डॉ. लोकेंद्र पहाड़िया द्वारा रोगियों का निशुल्क परीक्षण एवं इलाज किया गया। शिविर में लगभग 758 रोगियों का परीक्षण किया गया एवं शल्य कर्मकार में 123 रोगियों का सफल इलाज किया गया। विषय विशेषज्ञ प्रो. (डॉ) सचिन गुप्ता, पतंजलि विश्व विद्यालय, हरिद्वार द्वारा लेसर प्रोक्टोलॉजी विषय पर व्याख्यान दिया जिसमे शल्य तंत्र एवं प्रसूति तंत्र के चिकित्सकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों ने भाग लिया।

कैलाश चन्द्र बिशनोई, उप महानिरीक्षक पुलिस,जविप्रा के उचित निर्देशन एवं प्रबंधन में जेडीए निरंतर कर रहा अपने कर्तव्यों का नियमानुसार पालन

मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन आदर्श चौधरी के पर्यवेक्षण में दो अवैध निर्माणाधीन बहुमंजिला इमारतों पर की गयी प्रभावी कार्रवाई

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी) (1). जोन- पी.आर.एन.(नोर्थ) के क्षेत्राधिकार में अवस्थित कालवाड़ रोड़, गोकुल नगर में बिना एकीकरण कराये भूखण्ड संख्या सी-19, सी-20 दोनो भूखण्डों को मिलाकर में जेडीए की बिना अनुमति व स्वीकृति के सैटबैक बायलॉज का गंभीर उल्लंघन कर बेसमेन्ट+04 मंजिला में अवैध निर्माण किये जाने पर निर्माणकर्ता को धारा 32, 33 जेडीए एक्ट के तहत नोटिस जारी कर अवैध निर्माण हटाने हेतु पाबंद किया गया था। परन्तु निर्माणकर्ता द्वारा अवैध निर्माण नहीं हटाने पर सक्षम स्तर से स्वीकृति प्राप्त कर धारा 34 (क) का नोटिस जारी कर आज दिनांक 24.11.2024 को उक्त अवैध बिल्डिग के प्रवेष द्वारों खिड़कियों इत्यादि को इंजीनियरिंग शाखा की मदद से ईंटों की दीवारों से चुनवाकर गेटों पर ताले सील चपडी लगाकर नियमानुसार पुख्ता सीलिंग की कार्यवाही की गई। (2). जोन-पी.आर.एन.(नोर्थ) के क्षेत्राधिकार में अवस्थित कालवाड़ रोड़, गोकुल नगर में बिना एकीकरण कराये भूखण्ड संख्या-25, 26 दोनो भूखण्डों को मिलाकर में जेडीए की बिना अनुमति व स्वीकृति के सैटबैक बायलॉज का गंभीर उल्लंघन कर बेसमेन्ट+04 मंजिला में अवैध निर्माण किये जाने पर निर्माणकर्ता को धारा 32, 33 जेडीए एक्ट के तहत नोटिस जारी कर अवैध निर्माण हटाने हेतु पाबंद किया गया था। परन्तु निर्माणकर्ता द्वारा अवैध निर्माण नहीं हटाने पर सक्षम स्तर से स्वीकृति प्राप्त कर धारा 34 (क) का नोटिस जारी कर आज दिनांक 24.11.2024 को उक्त अवैध बिल्डिग के प्रवेश द्वारों इत्यादि को इंजीनियरिंग शाखा की मदद से ईंटों की दीवारों से चुनवाकर गेटों, शटरों पर ताले सील चपडी लगाकर नियमानुसार पुख्ता सीलिंग की कार्यवाही की गई।

उक्त कार्यवाहियां मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन आदर्श चौधरी के पर्यवेक्षण में उपनियंत्रक प्रवर्तन-तृतीय, प्रवर्तन अधिकारी जोन-पी.आर. एन.(नोर्थ) तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।उप महानिरीक्षक पुलिस, जविप्रा, जयपुर कैलाश चन्द्र बिशनोई ने समस्त नागरिकों से अपील है कि प्रवर्तन संबंधित शिकायतों के संबंध में वे स्वंय उपस्थित होकर; कन्ट्रोल रूम हेल्पलाईन नं. 0141 2565800, 0141 2575252, 0141 2575151 पर 24×7; हेल्प लाईन 181 राजस्थान सम्पर्क पोर्टल एवं जरिये मेल cce.jda@rajasthan.gov.in &enforcement.jda@rajasthan.gov.inपर अवैध निर्माण/ कब्जा/अतिक्रमण इत्यादि की शिकायत/परिवाद प्रस्तुत व सम्पर्क कर अवैध अतिक्रमणों के विरूद्ध अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान देवें।

चूरू में कौम कुरैशियान द्वारा आयोजित किया गया प्रथम सामुहिक समाज सम्मेलन कार्यक्रम

- **समाज में शिक्षा को बढ़ावा और सरल निकाह पर फ़ोकस कर समाज सुधार की दिशा में अहम पहल**
- **शादीयों में फिजुल खर्ची और दिखावे से गुरेज कर कुरैशी समाज के चहुंमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त करने पर रहा वक्ताओं का मार्गदर्शन**

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)। राजस्थान के चूरु में तंजीम जमिय्यतुल कुरैश संस्थान द्वारा शेखावाटी कौम कुरैशियान का प्रथम समाज सुधार सम्मेलन का आयोजिन मदरसा जामिया अरबिया दरुल उलूम में किया गया। इस मौके पर हाजी रफीक भादरा, पूर्व विधायक हाजी मकबूल मंडेलिया, नगर पालिका अध्यक्ष मुस्तफा कुरैशी, हाजी शकील खोकर और नईमुद्दीन कुरैशी जयपुर सम्मेलन के मुख्य अतिथि रहे। सुत्रो से मिली जानकारी के अनुसार सामुहिक सम्मेलन में समाज में दीन के साथ दुनियावी तालीम पर जोर देते हुए विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। सम्मेलन में उपस्थित मुफ्तियों और उलमाओं ने अपने सम्बोधन में कहा कि समाज रसूमात से परहेज करते हुए शादियों को कम खर्चीली और निकाह को आसान करने पर जोर दिया है। उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि समाज में महिला शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए ताकि महिला दो परिवारों की दशा और दिशा में बदलाव पैदा कर सकती है। आज हमारे समाज में देखने में आ रहा है बेटियों के मुकाबले में बेटे तालीम पर कम ध्यान दें रहें है यह चिंता का विषय है। बच्चे की पहली शिक्षिका उसकी माता है और पहला स्कूल उसका घर परिवार होता है लिहाजा अपने बच्चों को संस्कार, तहजीब, मानवीय मूल्यों और परोपकारी की भावना का समावेश होना चाहिए तभी स्वच्छ समाज और राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। सम्मेलन के संयोजक हाजी याकूब थीम ने कहा कि समाज की तरक्की के लिए गांव, तहसील और जिला वाइज समितियों का गठन कर जमीनी स्तर पर रचनात्मक कार्य करना होगा यथा भात छूछक, सगाई, शादी और जनगणना का कार्य भी करना होगा। हर तीन माह, छः माह और साल में एक बार चारों जिलों की मीटिंग होनी चाहिए और जो कार्य किया है वो सबके सामने आना चाहिए। स्वागत भाषण प्रधानाध्यापक अवेश कुरैशी ने दिया। हाजी शकील खोकर, मुस्तफा कुरैशी, ए खालिक जोधपुर, बशीर कुरैशी और मुफ्ती शफीक थीम नेभी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के संयोजक डॉ मुमताज अली कुरैशी ने सम्मेलन के उद्देश्यों और इसके महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज की तरक्की शिक्षा में ही निहित है हमें जमाने के साथ ही आगे बढ़ना होगा। सम्मेलन में झुंझुनूं, चूरू, सीकर, फतेहपुर, रामगढ़, लोसल, नवलगढ़, डूंडलोद, मंडावा, थेलासर, भादरा, नोहर, तारानगर, अजीतपुरा, राजगढ़, सरदारशहर, रतनगढ़, सुजानगढ़, हनुमानगढ़, बिसाऊ आदि कस्बों से समाज के गणमान्य लोग उपस्थित हुए जिसमें याकूब बेहलीम, हाजी फारुक कुरैशी, मोहसिन कुरैशी, जुबेर सय्यद, जमील कुरैशी, रमजान कुरैशी, शौकत अली गुटिया, शफी नागौरी, कबीर, इस्माइल, मेहमूद अली सय्यद, हाजी फारुक, बाबू भाई, मोहम्मद हारून, खालिक, मौलाना उमर कुरैशी, हाफिज अब्दुल, सत्तार कुरैशी, अब्दुल जब्बार खत्री, मास्टर फारूक कुरैशी आदी समेत हजारों की संख्या में क़ौम ए कुरैशीयान के गय्युर नौजवानों, बुजुर्गों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर हाजी मुस्ताक करेशी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

प्रदेश में स्कूल के सिलेबस में बदलाव की तैयारी

पहली से 8वीं तक की किताबों में होगा संशोधन, राज्य स्तरीय कमेटी करेगी इसका प्रणयन : शिक्षा मंत्री मदन दिलावर

- **मंत्री बोले-स्टूडेंट्स गलत तथ्य न पढ़ें**

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी)। राजस्थान सरकार स्कूल के सिलेबस में बदलाव की तैयारी कर रही है। सबसे पहले क्लास एक से आठवीं तक की किताबों में बदलाव किया जाएगा। सरकार द्वारा गठित की गई पाठ्यक्रम समीक्षा समिति की पहली बैठक में कक्षा 1 से आठवीं तक की किताबों पर विस्तृत रिपोर्ट पेश कर चर्चा की जाएगी।शिक्षा मंत्री की विशेष अधिकारी सतीश कुमार गुप्ता ने बताया- कक्षा एक से आठवीं तक की किताबों का निर्धारण राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद द्वारा किया जाता है। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने पाठ्यक्रम समीक्षा के लिए राज्य स्तर पर एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है। ऐसे में जल्द ही समिति की बैठक आयोजित की जाएगी। इसमें पाठ्यक्रम की समीक्षा की जाएगी। अगर समिति सिफारिश करती है तो कक्षा 1 से 8वीं तक की किताबों में संशोधन होना संभव है।शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा- राजस्थान के स्कूलों में स्टूडेंट्स किसी भी तरह से गलत तथ्यों का अध्ययन न करें। इस बात को ध्यान में रखते हुए - पाठ्यक्रम समीक्षा समिति का गठन किया है।सोडाणी अध्यक्ष और राठौड़ बने उपाध्यक्ष शिक्षा विभाग द्वारा बनाई गई पाठ्यक्रम समीक्षा समिति का अध्यक्ष वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी कोटा के कुलपति और प्रोफेसर कैलाश सोडाणी को बनाया गया है। शिक्षाविद हनुमान सिंह राठौड़ समिति के उपाध्यक्ष हैं। इसके साथ ही शिक्षाविद डी रामाकृष्ण राव सलाहकार और सतीश कुमार गुप्ता सदस्य सचिव के तौर पर कार्य करेंगे। इसके साथ ही समिति में कोटा यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति और राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य प्रोफेसर प्रमेंद्र कुमार दशोरा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर भारत राम कुमार, शिक्षाविद श्याम सुंदर बिस्सा, जयंतीलाल खंडेलवाल, कन्हैया लाल बेरीवाल को समिति का सदस्य नियुक्त किया गया है।

निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी, मालवीय नगर ने जारी किये निलंबन आदेश

विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम में अनुपस्थित बीएलओ निलंबित

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 24 नवंबर। निर्वाचन विभाग के आदेशों की अनुपालना में संचालित किये जा रहे विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम में लापरवाही बरतने एवं मतदान केन्द्र पर अनुपस्थित पाये जाने वाले बीएलओ श्री अशोक कुमार को निलंबित किया गया है। मालवीय नगर विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी डॉ. गोरधन लाल शर्मा ने निलंबन आदेश जारी किये हैं।डॉ. शर्मा ने बताया कि निर्वाचन विभाग के आदेशों की अनुपालना में जयपुर जिले में विशेष पुनरीक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, जिसके तहत सभी बीएलओ अपने मतदान केन्द्रों पर उपस्थित रहकर ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं का मतदाता सूची में पंजीकरण का कार्य संपादित कर रहे हैं। रविवार को उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आशीष कुमार ने मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किय, इस दौरान विधानसभा क्षेत्र मालवीय नगर में अधिशाषी अभियंता (दक्षिण) जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, गांधीनगर में स्थित बूथ नम्बर- 58 के बीएलओ अशोक कुमार गैरहाज़िर पाये गये, जिसपर कार्यवाही के निर्देश दिये गये। वहीं, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी विधानसभा क्षेत्र मालवीय नगर डॉ. गोरधन लाल शर्मा ने महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, शहीद ले. अभय. पारीक राजकीय बालिका विद्यालय, निदेशक पशुपालन विभाग, पशुधन भवन, टोंक रोड एवं अधिशाषी अभियंता (दक्षिण) जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, गांधीनगर, में स्थित बूथों का औचक निरीक्षण किया जिसमें भी बूथ नंबर- 58 का बीएलओ श्री अशोक कुमार अनुपस्थित पाये गये। जिसके बाद मौके पर ही उक्त बीएलओ के विरुद्ध निलम्बन की कार्यवाही की गई उल्लेखनीय है कि निर्वाचन विभाग द्वारा विशेष रूप से जो व्यक्ति 18 साल की आयु पूरी कर चुके हैं या जो व्यक्ति अन्य स्थान पर शिफ्ट हो चुके हैं वे विभिन्न फार्म जैसे फॉर्म-6 नया मतदाता कार्ड बनवाने के लिये,

डॉ. गोरधन लाल शर्मा ने किया मतदान केन्द्रों का औचक निरीक्षण

फॉर्म-7 नाम हटाने के लिये, फॉर्म-8 मतदाता कार्ड में संशोधन के लिये एवं फॉर्म-6बी आधार को मतदाता कार्ड से लिंक करने हेतु भरे जाते हैं। जिसके माध्यम से ऑनलाइन श्ङ्गशी१ ल्टी'स्त्र'ल्ली अस्त्रस्त्र के जरिये मतदाता स्वयं आवेदन कर सकते हैं अथवा मतदान केन्द्रों पर उपस्थित बीएलओ के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। निर्वाचन विभाग सहभागी लोकतंत्र के लिये जिससे अधिक से अधिक मतदाता लोकतंत्र के पर्वों में भाग ले सकें इसके लिये स्वीप गतिविधियां भी की जाती है। जिसमें 17 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले युवाओं का Voter Helpline App/ Voter Portal के माध्यम से अग्रिम आवेदन प्राप्त करने हेतु विधानसभा क्षेत्र मालवीय नगर के शैक्षणिक संस्थानों में कैम्पों का आयोजन कर अग्रिम आवेदन लिये गये हैं। साथ ही क्षेत्र के दिव्यांग मतदाताओं का शत प्रतिशत मतदाता सूची में नाम सुनिश्चित करने के लिये महावीर विकलांग सेवा समिति, प्रयास संस्थान, झालाना डूंगरी, श्री निर्मल विवेक विशेष विद्यालय एवं मूक बधीर संस्थान, त्रिमूर्ति सर्किल में मतदाताओं के विशेष कैम्पों का आयोजन किया गया। विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत मतदाताओं के पंजीकरण का कार्य दिनांक 28 नवंबर 2024 तक किया जाएगा। निर्वाचन संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये हेल्पलाइन नंबर 1950 पर संपर्क किया जा सकता है।

आईपीएल 2025

बने 25+ करोड़ का आंकड़ा छूने वाले पहले खिलाड़ी

श्रेयस अय्यर बने नीलामी इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी

मेगा नीलामी में श्रेयस अय्यर की लगी 26.75 करोड़ रुपये की बोली

नयी दिल्ली।

आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी में श्रेयस अय्यर पर 26.75 करोड़ रुपये की बोली लगी। उन्हें पंजाब किंग्स ने खरीदा। वह इस टीम की कप्तानी करते दिख सकते हैं। वह आईपीएल नीलामी इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए हैं। श्रेयस ने मिचेल स्टार्क को पीछे छोड़ा, जिन्हें पिछले साल कोलकाता नाइट राइडर्स ने 24.75 करोड़ रुपये में खरीदा था। श्रेयस के लिए पहले कोलकाता नाइट राइडर्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच लड़ाई हुई। इसके बाद कोलकाता ने नाम पीछे ले लिया और फिर पंजाब किंग्स की एंट्री हुई। फिर दिल्ली और पंजाब के बीच उन्हें खरीदने के लिए लड़ाई चली। इस तरह वह 20 करोड़ और फिर स्टार्क और 25 करोड़ का आंकड़ा पार कर गए। इतना ही नहीं वह आईपीएल के सबसे महंगे खिलाड़ी भी बन गए। पहली बार कि सी खिलाड़ी के लिए 25 करोड़ रुपये से ज्यादा की बोली लगी।

अय्यर ने भारत के लिए सभी प्रारूपों में खेला है। उन्होंने ज्यादातर वनडे क्रिकेट में अपनी उपयोगिता साबित की है, जहां उनका औसत 47 का है। उन्होंने 57 वनडे मैचों में पांच शतक और 18 अर्धशतक बनाए हैं। भारत के लिए 51 टी20 में अय्यर ने 30.66 के औसत और 136 से अधिक के स्ट्राइक रेट से 1,104 रन बनाए हैं, जिसमें आठ अर्धशतक और 74 का सर्वश्रेष्ठ स्कोर शामिल है।

दिल्ली कैपिटल्स (2015-21) के साथ अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने एक आक्रामक युवा खिलाड़ी के रूप में ख्याति अर्जित की थी। 2021 में श्रेयस पंत की कप्तानी में खेले थे। 2022 में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) में शामिल होने के बाद अय्यर ने अपनी कप्तानी में 2024 में कोलकाता को तीसरी बार खिताब दिलाया। आईपीएल 2024 के पूरे सीजन में अय्यर ने मेंटर गौतम गंभीर के साथ टीम के आक्रामक और अच्छे क्रिकेट ब्रांड का नेतृत्व किया।

अपने आईपीएल करियर में अय्यर ने 31.67 की औसत से 2,375 रन बनाए हैं। उनका स्ट्राइक रेट 123.96 का है और उन्होंने 16 अर्धशतक लगाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 96 रन का है। केकेआर के लिए अपने पिछले सीजन में उन्होंने 15 मैचों में 39.00 की औसत और 146 से अधिक के स्ट्राइक रेट से 351 रन बनाए थे। इनमें दो अर्धशतक शामिल हैं।

न्यूज अपडेट

शिक्षा स्वयं एक जीवन है, 'लर्निंग कभी खत्म नहीं होती' : रघुपति सिंघानिया

- **डिग्री पाकर खिले उठें छात्रों के चेहरें**
- **बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और डिजाइन स्टूडेंट्स को दी गयी डिग्रियां**

चमकता राजस्थान। जयपुर(खलील कुरैशी)। शिक्षा स्वयं एक जीवन है, लर्निंग कभी खत्म नहीं होती है। 20 साल बाद आपको कोई निराशा नहीं होनी चाहिए कि हम कुछ और बेहतर कर सकते थे। ये बात जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी के प्रो चांसलर रघुपति सिंघानिया ने कही। वह यूनिवर्सिटी के बारहवें कन्वोकेशन एंड फाउंडर्स डे सेरेमनी के अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर क्लास ऑफ 2024 बैच के इंजीनियरिंग, डिजाइन, मैनेजमेंट और पीएचडी स्टूडेंट्स को डिग्री दी गई एवं 6 स्टूडेंट्स को गोल्ड मेडल से नवाजा गया। इस मौके पर यूनिवर्सिटी के प्रो. चांसलर सिंघानिया ने यूनिवर्सिटी के गत 12 वर्षों में प्राप्त किए गए अचीवमेंट एवम ग्लोबल लेवल पर विभिन्न यूनिवर्सिटीज के साथ टाई अप के बारे मे जानकारी दी। उन्होंने स्टूडेंट्स से 'एंटरप्रेन्योरशिप' की थीम पर काम करने को कहा। उन्होंने यूनिवर्सिटी के अटल इनक्यूबेशन सेंटर को नीति आयोग द्वारा सराहे जाने की बात कही। पहली बार में ही ए प्लस नैक एक्रिडेशन जैसी उपलब्धियों का जिक्र करते हुए यूनिवर्सिटी मे स्टूडेंट्स को जॉब रेडी के साथ लाइफ रेडी बनाने की बात कही।

स्टूडेंट्स से कहा कि दुनिया को बदलने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है। इस अवसर पर आईसीआईसीआई के सीईओ संदीप बक्शी ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। उन्होंने जेके ऑर्गनाइजेशन और आईसीआईसीआई बैंक जैसे संगठनों द्वा-रा नैतिक मूल्यों, ट्रस्टीशिप और सामाजिक विकास के लिए एक मजबूत उदाहरण पेश करने की बात कही, जो सच्चे राष्ट्र निर्माण की पहचान है। उन्होंने स्टूडेंट्स से लक्ष्य प्राप्त होने तक डटकर संघर्ष करने को कहा। इस मौके पर यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो धीरज सांघी ने डिग्री को लाइफ की अगली सीढ़ी बताई। उन्होंने यूनिवर्सिटी के हाल ही के दौर किए गए कार्यों की जानकारी देते हुए सालाना परफोर्मेंस रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि यूनिवर्सिटी के लिए शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखना सर्वोपरी एवं प्रथम उद्देशय है। यूनिवर्सिटी के छात्रों, स्टाफ और लीडरशिप टीम ने मिलकर लक्ष्मीपत सिंघानिया की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की, जिनकी दूरदृष्टि पीढ़ियों को उत्कृष्टता की ओर प्रेरित करती रही है। यूनिवर्सिटी के प्रो. चांसलर हर्षपति सिंघानिया ने यूनिवर्सिटी के नवाचारों से अवगत करवाया। कार्यक्रम के दौरान ऑफिशिएटिंग रजिस्टार केके माहेश्वरी समेत विभिन्न डिपार्टमेंट के डायरेक्टर, फैकल्टी मेंबर, स्टूडेंट्स एवम पैरेंट्स समेत यूनिवर्सिटी के अन्य लोग उपस्थित थे।500 से अधिक उपस्थित लोगों- छात्रों, अभिभावकों, फैकल्टी, गणमान्य व्यक्तियों और बोर्ड सदस्यों के साथ कैंपस उमंग, उत्साह और गर्व से गूंज उठा। यह दिन न केवल शैक्षणिक सफलता का उत्सव था, बल्कि एक उज्जवल भविष्य की साझा आशा का प्रतीक भी था।

लोग पीठ में छुरा घोपनें में माहिर होते हैं,सांप से कितना ही प्रेम कर लो वह आप पर जहर उगलेगा ही : वसुंधरा राजे

कहा महलों में मख़मल पर सोने वाले राजा को भी जंगल में काँटों पर सोना पड़ता है, महाराणा का जीवन दर्शन हमें यही सिखाता

चमकता राजस्थान

झालरापटन/जयपुर (खलील कुरैशी)। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा कि बादल कुछ देर तो सूरज के आगे आकर उसे अदृशय कर सकते हैं,पर अधिक देर तक सूरज की दमक को रोकने का सामर्थ्य उनमें नहीं होता।महाराणा प्रताप के जीवन से हमें यह प्रेरणा लेनी चाहिए।उन्होंने ये भी कहा कि आजकल लोग पीठ में छुरा घोपनें में माहिर हैं।जबकि महाराणा कभी ऐसा नहीं करते थे।वे निहत्थे पर वार भी नहीं करते थे।दो तलवार साथ रखते थे,एक अपने लिए और एक निहत्थे के लिए। राजे महाराणा प्रताप की प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम में बोल रही थी।वे बोली उन्होंने महिलाओं पर कभी हमला नहीं किया।वे मातृभूमि की रक्षा के लिए अंत तक लड़े।पूर्व सीएम ने महाराणा प्रताप के 10 सीख बताते हुए कहा कि समय का चक्र पहिये सा घूमता है। महलों में मख़मल पर सोने वाले राजा को भी जंगल में काँटों पर सोना पड़ता है। महाराणा का जीवन दर्शन हमें यही सिखाता है।महाराणा का सिद्धांत था अत्यंत विकट परिस्थिति में भी जो हार नहीं मानते हैं,जीत उन्ही की होती है।जो सुख में अति प्रसन्न और संकट में डर कर झुक जाते हैं,उन्हें न तो सफलता मिलती और न ही इतिहास उन्हें याद रखता।सांप से कितना ही प्रेम करलो,वह अपने स्वभाव के अनुरूप कभी न कभी तो आप पर जहर उगलेगा ही।सर कटालो,लेकिन दुश्मन के सामने कभी सर मत झुकाओ।जब तक लक्ष्य प्राप्ति न हो जाये,तब तक 24 घंटे जागते रहो। सोओ मत।

- **ये रहे मौजूद**

अचार्य प्रज्ञा सागर जी महाराज,निरंजन नाथ जी महाराज अवधूत गऊघाट,रामदास जी महाराज लूटरीवाले,झंकारेश्वर महाराज पीपाधाम,साँसद दुष्यंत सिंह,राजपूत छात्रावास समिति के अध्यक्ष कृष्ण पाल सिंह झाला,संरक्षक चंद्र सिंह जी नाथावत,अतुलजीत सिंह झाला,गाडुलिया लुहार समाज अध्यक्ष बाल चंद, प्रांतीय उपाध्यक्ष घासी लाल,आरपीएससी के पूर्व अध्यक्ष श्याम सुंदर शर्मा, विधायक गोविंद रानीपुरिया,कालू मेघवाल, जिला प्रमुख प्रेम बाई डांगी, भाजपा नेता संजय ताऊ, पालिका अध्यक्ष वर्षा चांदवाड़, नीरज डांगी सहित अनेक गणमान्य जन रहे मौजूद थे।

जोधपुर में वेल्फेयर पार्टी ऑफ इण्डिया का एक दिवसीय कार्यकर्ता सम्मेलन और जिला स्तरीय की बैठक का हुआ विधिवत आयोजन

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी) । दिनांक 24 नवंबर 2024 को वेल्फेयर पार्टी ऑफ इण्डिया जोधपुर (राजस्थान) का एक कार्यकर्ता सम्मेलन और जिला सामान्य परिषद की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की सदारत प्रदेश अध्यक्ष वक़ार अहमद खान ने की। मीटिंग स्वागत भाषण जोधपुर ज़िला अध्यक्ष मोहम्मद छोटू ने दिया। प्रेदेश सचिव जनाब ज़ाकिर हुसैन ने जोधपुर में पिछले 12 सालों जो कार्य व प्रगति की उस पर प्रकाश डाला। जनाब अरशद आली प्रदेश सचिव (संगठन) ने प्रदेश में पार्टी के प्रचार व प्रसार पर अपने विचार रखे आपने बताया की राजस्थान में पार्टी जयपुर, कोटा, जोधपुर, स्वाईमाधोपुर, बाराँ, सीकर, टोंक व गंगापुर में स्थापित है और कार्य कर रही है जिला सामान्य परिषद की बैठक में सभी कार्यकर्ताओं से ज़िला अध्यक्ष के लिए सुझाव मांगे गये उनके नाम आने पर उन नामों पर चर्चा की गई और सर्वसम्मति से मोहम्मद छोटू घोसी को पुनः ज़िलाध्यक्ष चुना गया व ज़िला महासचिव श्री मोहम्मद रियाज़ व शहर अध्यक्ष अरविंद भाटी को सर्वसम्मति से प्रदेश अध्यक्ष वक़ार अहमद खान द्वारा मनोनीत किया गया।प्रदेश अध्यक्ष वक़ार अहमद खान ने अपने भाषण में मीटिंग को सम्बोधन करते हुए नए पदाधिकारियों को शुभ कामनाएँ दी। अपने अपने भाषण में पार्टी के उद्देशय व पार्टी के नज़रिये पर प्रकाश डाला। ख़ान ने कहा की पार्टी पूरे देश को एक कल्याण कारी देश बनाना चाहती है, पार्टी का म×कसद है की देश के सभी लोगों को रहने के छत मिले, हर हाथ को रोजगार मिले व हर पेट को रोटी मिले। वकार अहमद ने आगामी निगम व पंचायत के चुनावों में कार्यकर्ताओं को जोश के साथ भाग लेने के लिए कहा। बैठक में महिला व पुरुष कार्यकर्ताओं ने भी अपने भी विचार रखे। मीटिंग 120 महिला व पुरुष उपस्थित रहे। मंच का सफ़ल संचालन मोहम्मद रियाज़ ने किया। अंत में अंजला ने सभी पार्टी के मेम्बरान का धन्यवाद दिया और मीटिंग का समापन हुआ।

शहीद अशोक कुमार जाट की 13 वीं पुण्यतिथि पर आयोजित हुआ स्वैच्छिक रक्तदान शिविर

युवाओं व छात्रों ने बढ़-चढकर किया रक्तदान, कुल 107 यूनिट रक्त एकत्रित

चमकता राजस्थान।

कोटपूतली बहरोड (धर्मेंद्र बंसल)। कस्बे के लाल कोठी स्थित क्षेत्र के प्रतियोगी परीक्ष-ाओं के लिये सुप्रसिद्ध अशोका कोचिंग संस्थान द्वारा निरन्तर सामाजिक कार्यो व गतिविधियों में बढ़-चढकर योगदान दिया जा रहा है। संस्थान द्वा-रा समय-समय पर सामाजिक व शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। साथ ही सेमीनार, जागरूकता कैम्प, विधार्थियों के निःशुल्क रूकने एवं भोजन की व्यवस्था के साथ-साथ सेना एवं पुलिस भर्ती में निःशुल्क आवागमन की व्यवस्था की जाती है। इसी क्रम में ग्राम सांगटेड़ा निवासी शहीद अशोक कुमार जाट की 13 वीं पुण्यतिथि पर संस्थान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन संस्थान के चैयरमैन व समाजसेवी शंकर लाल कसाना के नेतृत्व में आयोजित हुआ। जिसमें बढ़-चढकर रक्तदान करते हुये युवाओं व छात्रों ने कुल 107 यूनिट रक्तदान किया। समाजसेवी कसाना ने सभी रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करते हुये प्रशस्ती पत्र भेंटकर सम्मानित किया। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष श्याम शर्मा, जिला महामंत्री गोपाल अग्रवाल, निदेशक इंजी. राजेश चौधरी, इंजी. योगेश चौधरी, इंजी. विक्रम कसाना, समाजसेवी रतन लाल शर्मा, प्रधानाचार्य पूरण कसाना, अमित प्रकाश शर्मा, राकेश शर्मा, लालचंद सैनी, अंकुर शर्मा, सोहन यादव, मुकेश चौधरी, झाबर सैनी समेत अन्य मौजूद रहे।

- **सामाजिक गतिविधियों में प्राथमिकता के साथ योगदान दे रहा अशोका कोचिंग संस्थान**

संक्षिप्त खबरें

युवक की गला घोंटकर हत्या

हरिद्वार। श्यामपुर थाना क्षेत्र में एक युवक की हत्या का मामला सामने आया है। युवक का शव रवासन नदी के किनारे एक गांव के मार्ग पर मिला है। युवक की गला घोंटकर निर्मम तरीके से हत्या की गई है। शव की शिनाख्त नहीं हुई है। श्यामपुर थाना प्रभारी नितेश शर्मा ने बताया कि शव क्षेत्र की बरसाती रवासन नदी के किनारे नालों वाला गांव के मार्ग पर पड़ा हुआ मिला है। मृतक के एक हाथ पर एम अक्षर गुदा हुआ है। उन्होंने बताया कि प्रथम दृष्टया युवक की गला घोटकर हत्या की गई प्रतीत होती है । संभवतः मृतक दिहाड़ी मजदूर हो सकता है। मृतक की शिनाख्त के प्रयास किया जा रहे हैं।

हर्ष फायरिंग में नौ साल के बच्चे की मौत, खुशी मातम में बदली

हरिद्वार। जनपद के खानपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में हर्ष फायरिंग का मामला सामने आया है। हर्ष फायरिंग में एक नौ साल के बच्चे को गोली लगी और उसकी मौत हो गई। खानपुर थाना पुलिस ने बच्चे के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सरकारी अस्पताल भेजा है। मामले की गहनता से जांच शुरू कर फायरिंग करने वाले सख्श की तलाश की जा रही है प्राप्त जानकारी के अनुसार खानपुर थाना क्षेत्र के लालचंदवाला गांव में मुस्लिम समाज के एक परिवार में एक शादी समारोह चल रहा था।

पुलिस का 5 घंटे चला धरपकड़ अभियान

फिरोजाबाद। जनपद पुलिस ने शनिवार की रात में पांच घंटे अभियान चलाकर 90 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अभियुक्त विभिन्न मुकदमों में वांछित हैं, जो फरार चल रहे थे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सौरभ दीक्षित द्वारा वारंटियों, एनबीडब्लू व एसआर केसों में वांछित अभियुक्तों के विरुद्ध शनिवार की रात 12.00 बजे से सुबह 05.00 बजे तक अभियान चलाया। इस अभियान के अन्तर्गत जनपदीय पुलिस द्वारा कुल 90 वाँछित अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया।

सम्भल में जामा मस्जिद का सर्वे कार्य पूरा: विष्णु

लखनऊ। सम्भल में जामा मस्जिद में सर्वे कार्य के दौरान भारी बवाल के बीच एडवोकेट कमीशन का सर्वे पूर्ण हो गया है। यह जानकारी देते हुए हिन्दू पक्षकार के एडवोकेट विष्णु शंकर जैन ने मीडिया को दी। रविवार को एडवोकेट विष्णु शंकर जैन ने बताया कि जामा मस्जिद में सर्वे कार्य पूर्ण कर लिया गया है। सर्वे के दौरान मस्जिद कमेटी के सभी सदस्य एवं उनके एडवोकेट भी उपस्थित रहे। सर्वे के दौरान फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी भी कराई गई है। हिन्दू पक्षकार के एडवोकेट जैन ने बताया कि 29 नवंबर को कोर्ट के समक्ष एडवोकेट कमीशन की रिपोर्ट पेश की जाएगी। सर्वे का कार्य शुरू होने पर वहां बवाल होने लगा। जिसके कारण कुछ कार्य में विलम्ब हुआ।

हुडा जैसे कमजोर आदमी ने डीएससी को आरक्षण नहीं दिया : कृष्ण बेदी

जींद। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण बेदी ने कहा कि हुडा जैसे कमजोर आदमी ने डीएससी को आरक्षण नही दिया बल्कि उन्होंने तो आरक्षण खोसने का काम किया। उन्होंने एक्ट नही बनाया। विधनसभा नही बुलाई। यह सब दिखाया था। जिसे अब सब समझ चुके हैं। मुख्यमंत्री ने जींद में ही कहा था कि आप तीसरी बार सरकार बनाने का काम करो। पहली कलम से डीएससी समाज का भाग्य लिखने का काम करें। सरकार बनते ही पहला काम मुख्यमंत्री ने अपना वादा निभा दिया। मंत्री बेदी रविवार को एकलव्य स्टेडियम में महर्षि वाल्मीकि जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। यह जो डीएससी समाज का भाग्य आपने लिखा है, यह छोटी लड़ाई नही है। पंजाब के समय से यह लड़ाई चल रही थी। पंजाब को तो अपनी मंजिल मिल गई लेकिन हरियाणा को नही मिली।

खड़ी बस में लगी आग

कानपुर। बर्रा थाना क्षेत्र में बर्रा बाईपास पर खड़ी एक सीएनजी बस में रविवार को अचानक आग लग गई। आग लगते ही वहां अफरा–तफरी मच गई और चालक व खलासी किसी तरह जान बचाने में कामयाब हो गए। आग की सूचना पर पहुंचे अग्निशमन दल के कर्मचारियों ने आग पर काबू पाने में कामयाबी पा लिया। आग से कोई जनहानि नहीं हुई। पुलिस उपायुक्त दक्षिण अंकिता शर्मा ने बताया कि रविवार भोर में इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप के पास बर्रा बाईपास पर खड़ी एक सीएनजी बस में अचानक आग लग गई। यह सूचना जैसे ही कंट्रोल रूम को मिली तो फायर स्टेशन फजलगंज की टीम तत्काल एक दमकल लेकर पहुंची।

मध्य प्रदेश के नए डीजीपी बने कैलाश मकवाना

भोपाल। मध्य प्रदेश डीजीपी के पद पर नए आईपीएस अफसर की नियुक्ति हुई है। 1988 बैच के आईपीएस अधिकारी कैलाश मकवाना मध्य प्रदेश के नए डीजीपी (पुलिस महानिदेशक) होंगे। सीएम डॉ. मोहन यादव के विदेश यात्रा पर जाने के बाद शनिवार देर रात गृह विभाग ने इस संबंध में आदेश जारी कर दिए है। मौजूदा डीजीपी सुधीर सक्सेना 30 नवंबर को रिटायर हो रहे हैं।

युवाओं में अनुशासन की भावना को जागृत करता है एनसीसी : विष्णुदेव

मुख्यमंत्री 76वें एनसीसी दिवस समारोह में हुए शामिल

रायपुर। एजेंसी

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय रविवार को राजधानी रायपुर के पुलिस परेड ग्राउण्ड में आयोजित 76वें एनसीसी दिवस समारोह में शामिल हुए। एनसीसी दिवस समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि एनसीसी युवाओं में राष्ट्रप्रेम और अनुशासन की भावना को जगाता है और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। मुख्यमंत्री ने एनसीसी कैडेट्स की परेड की सलामी ली। एनसीसी दिवस कार्यक्रम में एनसीसी के छात्र-छात्राओं द्वारा मार्च पास्ट, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनोहारी प्रस्तुति के साथ ही हार्स राइडिंग, एरो मॉडलिंग, सेक्शन मूवमेंट, सीमा फोर जैसे प्रदर्शन किये गए। मुख्यमंत्री ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले केडेट्स को पुरस्कृत किया।

साथ ही 76वें एनसीसी दिवस समारोह के मौके पर प्रकाशित पुस्तक का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सभी को 76वें एनसीसी दिवस की बहुत-बहुत बधाई देते हुए कहा कि आज एक बार फिर मुझे आप लोगों के बीच आने का अवसर मिला है। आप लोगों के बीच जब भी आता हूं, नई ऊर्जा से भर जाता हूं। आज आप लोगों ने एनसीसी दिवस पर शानदार परेड मार्च किया, एरो मॉडलिंग प्रदर्शन किया, घुड़सवारी का प्रदर्शन किया और सेक्शन अटैक का प्रदर्शन किया। आप लोगों के प्रदर्शन से मैं भी जोश से भर गया हूं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि मुझे अच्छी तरह याद है कि नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होकर जब हमारे कैडेट लौटे थे, तब भी आप लोगों से मुलाकात हुई थी। गणतंत्र दिवस के मौके पर नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर छत्तीसगढ़ के एनसीसी कैडेटों को परेड करते हुए देखना बड़ा ही सुखद होता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एनसीसी एक ऐसा संगठन है जो युवाओं को अनुशासन सिखाता है, उनके चरित्र का निर्माण करता है, उन्हें साहसी बनाता है और निःस्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करता है।

राष्ट्रप्रेम की भावना कूट कूट कर भरी हुई है

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे कैडेट भारत के विभिन्न राज्यों से आए एनसीसी कैडेटों के साथ कदम से कदम मिलाते हुए जब तिरंगे को सलामी देते हैं तो प्रत्येक छत्तीसगढ़िया गर्व से भर उठता है। हमारे देश की यही खूबसूरती है। अलग-अलग भाषा और अलग-अलग क्षेत्रों के होने के बावजूद हम सभी में राष्ट्रप्रेम की भावना कूट कूट कर भरी हुई है। एनसीसी इसी राष्ट्र प्रेम को सींचता है, राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है।

बसपा अब कभी उपचुनाव नहीं लड़ेगी : मायावती

लखनऊ। एजेंसी

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) मायावती ने महाराष्ट्र व झारखंड की विधानसभा और यूपी की नौ विधानसभा की सीटों पर हुए उपचुनाव के बाद आये नतीजे के बाद अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि फर्जी वोटिंग रोकने के लिए जब तक चुनाव आयोग कोई कदम नहीं उठायेगा, तब तक हमारी पार्टी खासकर उपचुनाव नहीं लड़ेगी।बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि उत्तर प्रदेश में नौ विधानसभा की सीटों पर हुए उपचुनाव में इस बार जो मतदान हुआ है और उसके बाद जो कल नतीजे आए हैं। उसको लेकर लोगों में आम चर्चा है कि पहले देश में बैलेट पेपर के जरिए चुनाव जीतने के लिए सत्ता का दुरुपयोग करके फर्जी वोट डाले जाते थे और अब तो ईवीएम के जरिए भी ये कार्य किया जा रहा है, जो लोकतंत्र के लिए बहुत दुख और चिंता की बात है। इतना ही नहीं देश में लोकसभा और राज्यों में विधानसभा चुनाव के साथ-साथ खासकर उपचुनाव में तो अब ये कार्य काफी खुलकर किया जा रहा है। ये सब हमें हाल ही में हुए उत्तर प्रदेश के उपचुनाव में देखने को भी मिला है।

महाराष्ट्र राज्य में विधानसभा के हुए आम चुनाव में भी इसको लेकर काफी आवाजें उठाई जा रही है। ये अपने देश और लोकतंत्र के लिए खतरे की बड़ी घंटी भी है। ऐसी स्थिति में अब हमारी पार्टी ने ये फैसला लिया है कि जब तक देश में फर्जी वोटों को डालने से रोकने के लिए देश के चुनाव आयोग द्वारा कोई सख्त कदम नहीं उठाए जाते हैं।

जॉर्डन में इजराइली दूतावास के बाहर फायरिंग करने वाला मारा गया

अम्मान। एजेंसी

जॉर्डन की राजधानी अम्मान के रबियाह इलाका स्थित इजराइली दूतावास के पास गोलीबारी करने वाले आरोपित को पुलिस ने मार गिराया है। हमलावर की गोलीबारी में तीन पुलिसकर्मी भी घायल हुए हैं। जॉर्डन के अधिकारियों ने घटनाक्रम की जानकारी दी है। जॉर्डन के सार्वजनिक सुरक्षा निदेशालय की तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक रविवार तड़के जॉर्डन की राजधानी अम्मान के रबियाह इलाके में एक हमलावर अचानक इजराइली दूतावास के पास सुरक्षाकर्मियों पर गोलीबारी करने लगा। गोलीबारी में तीन सुरक्षाकर्मी घायल हो गए। सुरक्षाबलों ने भागते हुए हमलावर का पीछा किया और आरोपित को मार गिराया। हमलावर की पहचान अभी नहीं हुई है।

उल्लेखनीय है कि साल 1994 से इजराइल-जॉर्डन के बीच शांति समझौता है लेकिन हमास के साथ युद्ध और लेबनान में इजराइली

हमले के बाद से दोनों देशों के बीच काफी तनाव है। उधर, इजराइल ने शनिवार देर रात लेबनान की राजधानी बेरूत पर हवाई हमला किया जिसमें एक रिहायशी इमारत को निशाना बनाया गया। हमले में 20 लोगों की मौत हो गई। लेबनान स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक हमले में 66 लोगों घायल हुए हैं, इनमें से कई की हालत गंभीर है। इजराइली अधिकारियों के मुताबिक उसने हिज्बुल्लाह के एक टॉप कमांडर मोहम्मद हैदर को मारने के लिए यह हमला किया था। जबकि हिज्बुल्लाह ने कहा है कि हमले में उसके किसी व्यक्ति की मौत नहीं हुई है।

मुसलमानों और यादवों का साथ छोड़ना अखिलेश की असली पीड़ा: ब्रजेश पाठक

लखनऊ। एजेंसी

उप्र के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने रविवार को कहा कि समाजवादी पार्टी की जमीन खिसक गयी है। अब उनके साथ उनका वोट बैंक यादव और मुस्लिम समाज भी नहीं रहा। कुंदरकी में भाजपा की डेढ़ लाख मतों से जीत, करहल और सीसामऊ विधान सभा सीटों पर सपा के कम हुए मत, यह बयां कर रहे हैं। अखिलेश यादव के रविवार को पत्रकार वार्ता कर चुनाव नतीजों और संभल में मस्जिद के सर्वे पर सवाल उठाने के कुछ देर बाद उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय पर पत्रकार वार्ता की। उन्होंने कहा कि उपचुनाव परिणाम के बाद जमीन खिसकने से विपक्षी दलों, खास कर सपा में खलबली है। उन्होंने कहा कि सपा के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई है। सपा के लूट खसोट, गुंडई से जनता वाकिब है। जब-जब सत्ता मिली तब तब यह उपद्र किये। अयोध्या में सपा के एक नेता ने निषाद बेटी के साथ दुष्कर्म किया। हद तो तब हो गयी जब वोट देने से इनकार किया तो सपा के गुंडों ने करहल में एक दलित बेटी की हत्या कर दी। उसके माता पिता चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं, सपा के गुंडों ने उनकी बेटी की हत्या की है। अखिलेश को जवाब देना चाहिए। ब्रजेश पाठक ने कहा कि वह चुनाव परिणाम को स्वीकारना नहीं चाहते हैं। लोकसभा चुनाव में झूठ बोलकर वोट पा लिए, उन्हें नहीं पता की अब उनकी हांडी नहीं चढ़ने वाली। इंडी गठबंधन के बारे में जनता समझ गयी है। इन्हें लोकतंत्र पर भरोसा ही नहीं है। कभी संविधान पर तो कभी चुनाव आयोग पर सवाल उठाते हैं। चुनाव में हारना इनकी पीड़ा नहीं है बल्कि इनकी पीड़ा कुछ और है। दरअसल इनका वोट बैंक खिसक गया है।

इन्हें मुसलमानों ने भी वोट नहीं दिया। यह मुसलमानों को अपना वोट बैंक समझ रहा थे। कुंदरकी विधान सभा का परिणाम इसका सबूत है। यहां पोस्टल बैलेट के माध्यम से जितने मत पड़े, उसमें भी भाजपा को सर्वाधिक वोट मिला है।कुंदरकी में भाजपा डेढ़ लाख से जीती है।

टूरिस्ट बस दुर्घटना में एक मौत, 10 घायल

कौशांबी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मूरतगंज कस्बे में एक टूरिस्ट बस अचानक अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में बस सवार एक यात्री की मौत हो गई, जबकि 10 अन्य लोग घायल हो गए। बस में कुल 40 यात्री सवार होकर बनारस से प्रयागराज के रास्ते दिल्ली जा रही थी। घायलों को मूरतगंज व मेडिकल कॉलेज मंझनपुर में भर्ती कराया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना का संज्ञान में लिया। उन्होंने यहां के अधिकारियों को मौके पर भेजकर घायलों को बेहतर इलाज मुहैया कराने के निर्देश दिए हैं। आंध्र प्रदेश से एक टूरिस्ट बस बनारस के टूरिस्ट प्लेस घूमने आई थी। बस बनारस से प्रयागराज के रास्ते कौशांबी होते हुए दिल्ली जा रही थी। रविवार सुबह चार बजे बस तेज रफ्तार से मूरतगंज तिराहे पर अनियंत्रित होकर एक टैक्सी को चपेट में लेते हुए पलट गई। बस के पलटने से बस में सवार 67 वर्षीय वृद्ध की मौत हो गई जबकि 10 अन्य यात्री घायल हो गए। गंभीर घायल चार लोगों को इलाज के लिए मेडिकल कालेज मंझनपुर एवं पांच अन्य घायल को पीएचसी मूरतगंज में भर्ती कराया गया।

दस हजार रुपये का इनामी बदमाश गिरफ्तार

चित्तौड़गढ़। जिले के निम्बाहेड़ा कस्बे में करीब डेढ़ वर्ष पूर्व विनोद कीर का अपहरण कर हत्या करने के मामले में गिरफ्तार हो जेल से अंतरिम जमानत पर फरार इनामी बदमाश को आखिर पुलिस ने भीलवाड़ा जिले से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपित सुरेन्द्र उर्फ शेरू कीर सदर चित्तौड़गढ़ थाने का हिस्ट्रीशीटर होकर इस पर पुलिस अधीक्षक कार्यालय से दस हजार रुपये का इनामी भी घोषित किया था। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार करने के लिए पिछले 8 माह में राजस्थान व मध्यप्रदेश में 100 से भी ज्यादा संदिग्ध ठिकानों पर दबिश देकर तलाश की थी। पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने बताया कि गत वर्ष मई माह में कोतवाली निम्बाहेड़ा थाना क्षेत्र के कल्याणपुरा निवासी विनोद कीर का अपहरण कर उसकी हत्या की हुई थी। मामले में कोतवाली निम्बाहेड़ा पुलिस ने आरोपित सुरेन्द्र उर्फ शेरू कीर को गिरफ्तार किया था।

बाबा बंदा सिंह बहादुर का जीवन सबके लिए प्रेरणादायक : सुभाष

फतेहाबाद। एजेंसी

महान अमर शहीद बाबा बंदा सिंह बहादुर जी की पावन याद में समर्पित भूना गुरुद्वारे में 78वां वार्षिक दीवान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की और सबके सुख समृद्धि की अरदास की। सांसद सुभाष बराला ने रविवार को संगत को संबोधित करते हुए कहा कि मन से संत और कत्र्तव्य से योद्धा बाबा बन्दा सिंह जी ने ज्ञान व रणकौशल का विलक्षण परिचय दिया और मुगल आक्रान्ताओं के हौंसले पस्त किए। किसानों के हितों और उनकी रक्षा के लिए उन्होंने संघर्ष किया और अपने शौर्य व पराक्रम से उन्हें भयमुक्त किया। बराला ने कहा कि बाबा बंदा सिंह बहादुर का बलिदान राष्ट्र और समाज की

एकता हेतू हम सबके लिए राष्ट्र सेवा की बहुत बड़ी प्रेरणा है। हमें उनके जीवन चरित्र से देश और समाज सेवा की सीख लेकर सेवा के क्षेत्र में आगे बढने. की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बाबा बंदा सिंह बहादुर हमारे समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है, जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करके समाज की परवाह की और बाहरी आक्रमणकारियों से बचाने के लिए बलिदान दिया। उनकी सेवा में समाज के हर वर्ग के लोग शामिल थे।

अनुसूचित जातियों के वर्गीकरण को अमलीजामा पहना भाजपा ने निभाया वादा : नायब सिंह सैनी

संवाददाता

जींद। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि अनुसूचित जातियों में कुछ लोग अभी भी आरक्षण के लाभ से वंचित रह रहे थे। भाजपा उन्हें यह लाभ देकर समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए विधानसभा चुनाव के दौरान संकल्प लिया था। इसके साथ ही वर्गीकरण करने का वादा भी किया था। उन्हें खुशी है कि हरियाणा प्रदेश में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनते ही इस वादे को अमलीजामा पहनाते हुए वर्गीकरण को अमलीजामा पहनाने का काम किया है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी रविवार को एकलव्य स्टेडियम में महर्षि वाल्मीकि जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह में मंत्री बेदी व विधायक कपूर सिंह ने पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। सीएम ने

कहा कि सरकारी सेवाओं, सीधी भर्ती में आरक्षित 20 प्रतिशत कोटे में से 10 प्रतिशत कोटा अनुसूचित जातियों के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित किया गया है।

यदि वंचित अनुसूचित जातियों के उपयुक्त उम्मीदवार नही हैं तो शेष रिक्त पदों को अन्य अनूसचित जातियों के उम्मीदवारों से भरा जाएगा। यदि उनमें भी उपयुक्त नही हैं तो शेष फिर वंचित जातियों के उम्मीदवारों में ही विचार किया जाएगा। इससे पहले अनूसूचित जातियों को प्रथम व द्वितीय श्रेणी में डेढ़ प्रतिशत आरक्षण दिया है। प्रदेश में 50 प्रतिशत सफाई ठेके सफाई मित्रों व उनके समूहों को ही दिए जाएंगे। उससे बाहर नही जाएंगे। सफाई कर्मियों के हितों की रक्षा के लिए हरयिाणा राज्य सफाई कर्मचारी आयोग का गठन भी किया है। सफाई कर्मियों का वेतन 16 से बढ़ा कर 26 से 27 हजार करने का संकल्प सरकार ने लिया है। यह भी निर्णय लिया है कि सफाईकर्मियों की डयूटी पर मृत्यु होने पर पांच लाख, सीवरेज में काम करते हुए दुर्घटना होने पर दस लाख बीमे का प्रावधान किया है। पांच हजार से अधिक एजेंसी कर्मियों को संबंधित पालिका के रोल पर लिया है। देश के किसी भी कालेज में इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वालों अनुसूचित जाति के छात्रों को छात्रवृति सरकार देगी।

राजनीति उत्तर प्रदेश विधानसभा उपचुनाव–2024 में 9 में से 6 पर कमल व एक पर एनडीए गठबंधन (रालोद) ने दर्ज की जीत

साढ़े सात वर्ष में अधिकांश चुनावों में मिली है एनडीए को जीत

● जीत की गारंटी बन गए हैं योगी!

लखनऊ। एजेंसी

योगी आदित्यनाथ यानी जीत की गारंटी का नाम। विकास, रोजगार, सख्त कानून व्यवस्था, समृद्धि की बदौलत उत्तर प्रदेश के प्रति लोगों के मन में धारणा बदलने वाले योगी आदित्यनाथ की स्वीकार्यता अपने प्रदेश के 'मन-मन' के साथ अन्य प्रदेशों के 'जन-जन' में बढ़ गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव, उपचुनाव, विधान परिषद उपचुनाव, नगर निकाय चुनावों में भाजपा व एनडीए को जीत दिलाई

तो अन्य राज्यों में भी भाजपा कार्यकर्ता के रूप में खूब पसीना बहाया। लिहाजा पीएम मोदी के नेतृत्व में कई राज्यों में भाजपा सरकार बनी। इसमें योगी आदित्यनाथ ने भी काफी मेहनत की। कुंदरकी व कटेहरी में भी कमल खिलाकर भाजपा ने नेतृत्व को विश्वास दिला दिया कि यूपी को योगी का ही साथ पसंद है, लिहाजा जन-जन ने योगी आदित्यनाथ को जीत की गारंटी मान लिया है।

निकाय चुनाव में भी भाजपा का क्लीन स्वीप, 17 में खिला कमल योगी की रणनीति व संवाद का ही असर रहा कि इस बार निकाय चुनाव में भी भाजपा ने क्लीन स्वीप किया। इस बार यूपी की सभी 17 की 17 नगर निगमों में भारतीय जनता पार्टी के महापौर निर्वाचित हुए हैं, जबकि पिछली बार 2017 में यह आंकड़ा 16 में से 14 का था। पिछली बार यूपी में भाजपा के 596 पार्षद जीते थे, जबकि इस बार यह आंकड़ा बढ़कर 813 हो गया।

शहरों में भाजपा की यह जीत योगी के विकास परक नीति पर आमजन की मुहर है। नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद पर 2017 में भाजपा को 60 सीटों पर जीत मिली थी। 199 सीटों में से यह आंकड़ा इस बार बढ़कर 88 पहुंच गया। पालिका परिषद सदस्यों में

पिछली बार भाजपा को 923 सीट मिली थी, 2023 में यह बढ़कर 1353 हो गई। नगर पंचायतों में भी 191 सीटों में अध्यक्ष पद पर भाजपा के प्रतिनिधि काबिज हुए। 2017 में यह आंकड़ा 100 का था। योगी के नेतृत्व में 2023 में 91 सीटें और बढ़कर भाजपा की झोली में आई, वोट प्रतिशत में भी खूब इजाफा हुआ। भाजपा के नगर पंचायत सदस्यों की संख्या भी 664 से बढ़कर 1403 हो गई। वहीं नगर निगम, पंचायत व पालिका में भी सपा की साइकिल पंचर हो गई तो बसपा का हाथी भी गिर गया जबर्दस्त गिरा। विधान परिषद चुनाव: अखिलेश की चाल पर योगी की कुशल रणनीति पड़ी भारी लक्ष्मण आचार्य के महामहिम राज्यपाल व बनवारी लाल दोहरे के निधन के कारण मई में विधान परिषद की दो सीटों पर उपचुनाव हुए। 403 में से 396 वोट पड़े थे, जबकि एक अवैध हो गया। सीएम योगी की कुशल रणनीति से अखिलेश की कुटिल चाल यहां भी धरी की धरी रह गई। भाजपा प्रत्याशी मानवेंद्र सिंह 280 व पद्मसेन चौधरी 279 मत पाकर परिषद पहुंचे।

पचपन लाख की आर्थिक सहायता पर उठाया सीमेन्ट प्लांट में कार्मिक का शव

चित्तौड़गढ़। एजेंसी

जिले के शंभूपुरा में स्थित सीमेन्ट प्लांट में शनिवार को एक कार्मिक की ऊंचाई से गिरने से मौत हो गई थी। इस मामले में देर रात 55 लाख की आर्थिक सहायता पर सहमति बनी और शव उठाया। मामले की जानकारी मिलने पर बड़ी संख्या में ब्राह्मण समाज के लोग जिला चिकित्सालय पहुंचे। मामले में न्याय की मांग की गई तो वहीं परिवार जन ने फैक्ट्री प्रबंधन पर गंभीर आरोप लगाए थे।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा जिले के मांडल निवासी निखिल पुत्र दिनेश सनाढ्य आदित्य सीमेन्ट में बिजली का काम करता था। शनिवार को वह करीब 15 फीट ऊंचे टॉवर पर चढ़ा था और काम के दौरान नीचे जा गिरा। अचानक हुए हादसे से आसपास के लोग दौड़े और उसे अस्पताल पहुंचाया। लेकिन उससे पहले ही उसकी सांसें थम गई। जिला चिकित्सालय में चिकित्सकों ने उसकी जांच कर उसे मृत घोषित कर दिया। फैक्ट्री प्रबन्धन ने मांडल उसके परिजनों को सूचित किया। फिलहाल मृतक का शव मोर्चरी में रखा गया है। मृतक प्लांट की कॉलोनी में ही निवास कर रहा था।फैक्ट्री में हुए हादसे के बाद कारखाने के बाहर और अस्पताल में अतिरिक्त जाप्ता तैनात किया गया था। सीमेन्ट प्लांट के अधिकारी भी अस्पताल पहुंचे। इधर, मुआवजे की मांग की आशंका को देखते हुए जाप्ता तैनात कर दिया गया था।

संक्षिप्त खबरें

बीस देशों के बैडमिंटन खिलाड़ी लखनऊ में दिखाएंगे प्रतिभा

लखनऊ। कई देशों के बैडमिंटन खिलाड़ी 26 नवम्बर से लखनऊ में होंगे। इसी दिन से सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशन एचएसबीसी वर्ल्ड टूर सुपर बैडमिंटन चैंपियनशिप की शुरूआत हो रही है, जो एक दिसम्बर तक चलेगा। इसमें पीवी सिंधु, एशियन जूनियर चैंपियन लक्ष्य सेन, सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी व चिराग शेट्टी सहित कई भारतीय दिग्गज बैडमिंटन कोर्ट में देखने को मिलेंगे। इस प्रतियोगिता में भारत सहित 20 देशों के 256 खिलाड़ी प्रतिभाग करेंगे। इसमें सबसे ज्यादा भारत के 163 खिलाड़ी होंगे। दूसरी ओर चीन के भी 25 खिलाड़ी चुनौती पेश करेंगे। वहीं मलेशिया के 20 व थाईलैंड के 18 खिलाड़ी इस प्रतियोगिता में भाग लेंगे। उप्र बैडमिंटन एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. नवनीत सहगल ने बताया कि चैंपियनशिप में कुल 210,000 अमेरिकी डालर की ईनामी राशि का वितरण होगा। उन्होंने कहा कि 26 नवम्बर को क्वालीफाइंग मुकाबले खेले जाएंगे, जबकि मुख्य ड्रा के मुकाबले 27 नवम्बर से शुरू होंगे। फाइनल मुकाबला एक दिसंबर को खेला जाएगा। चैंपियनशिप में मुख्य ड्रा 32-32 का होगा। इसमें 24 खिलाड़ियों को सीधे इंट्री मिलेगी, जबकि जिसमें आठ खिलाड़ी क्वालीफायर कोटा से मुख्य ड्रा में प्रवेश करेंगे। डॉ. नवनीत सहगल ने कहा कि भारतीय बैडमिंटन एसोसिएशन के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश बैडमिंटन एसोसिएशन द्वारा आयोजित चैंपियनशिप के मुकाबले गोमतीनगर स्थित योनेक्स सनराइज बाबू बनारसी दास बैडमिंटन अकादमी के कोर्ट पर खेले जाएंगे।

जॉर्जिया प्लिम्मर चोट के कारण शेष वर्ष के लिए क्रिकेट से बाहर

वेलिंग्टन। न्यूजीलैंड महिला क्रिकेट टीम की युवा सलामी बल्लेबाज जॉर्जिया प्लिम्मर चोट के कारण शेष वर्ष के लिए क्रिकेट मैदान से बाहर हो गई हैं। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने रविवार को जारी बयान में यह जानकारी दी। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने बताया कि 20 वर्षीय खिलाड़ी को पिछले महीने भारत में एकदिवसीय श्रृंखला के दौरान बाएं कूल्हे के जोड़ में दर्द का अनुभव हुआ था। न्यूजीलैंड से लौटने पर एमआरआई स्कैन और जांच से चोट की पुष्टि हुई। चोट का मतलब है कि प्लिम्मर क्रिसमस से पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए उपलब्ध नहीं होंगी। साथ ही अधिकांश हैलीबर्टन जॉनस्टोन शील्ड और ड्रीम 11 सुपर स्मैश घरेलू प्रतियोगिताओं को भी मिस करेंगी। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने बयान में कहा कि जॉर्जिया को छह सप्ताह के आराम और पुनर्वास की आवश्यकता होगी तथा जनवरी में वह तीव्र गति से दौड़ने में पुनः वापसी करेंगी।

दृष्टिबाधित क्रिकेट प्रतियोगिता : फाइनल में उप्र को हराकर हरियाणा ने खिताब पर किया कब्जा

लखनऊ। डॉ. शकुन्तला मिश्रा स्मारक राष्ट्रीय दृष्टिबाधित क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल मैच में उत्तर प्रदेश की टीम को हराकर हरियाणा ने खिताब पर कब्जा कर लिया। इस मैच में हरियाणा के अरिंदम मंडल ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 102 रन बनाये। टी.एस मिश्रा विश्वविद्यालय के मैदान में खेले गये मैच में उप्र की टीम ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। हरियाणा की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में बिना कोई विकेट खोए 204 रन बनाये। इसमें हरियाणा के सलामी बल्लेबाज अरिंदम मंडल ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 102 रन बनाये और दूसरे सलामी बल्लेबाज पारस भाटिया ने 73 रनों की नाबाद पारी खेली। इसके जवाब में उत्तर प्रदेश की टीम 18.4 ओवरों में मात्र 164 रनों पर ऑल आउट हो गई।

आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बने ऋषभ पंत, लखनऊ ने 27 करोड़ रुपये में खरीदा

जेद्दाह। एजेंसी

भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए हैं। सऊदी अरब के शहर जेद्दाह में आईपीएल 2025 के लिए चल रही मेगा नीलामी में पंत को लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) ने 27 करोड़ में खरीदा है। पंत ने इस मामले में श्रेयस अय्यर को पीछे छोड़ दिया है जो थोड़ी देर पहले ही 26.75 करोड़ रुपये में बिके। नीलामी प्रक्रिया दो दिनों रविवार और सोमवार तक चलेगी।

ऋषभ पंत दो करोड़ रुपये के आधार मूल्य के साथ नीलामी में उतरे थे। उन्हें खरीदने के लिए एलएसजी और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के बीच शुरूआत में जंग देखने मिली। कम ही समय पर पंत पर बोली 10 करोड़ रुपये के पार पहुंच गई। इस बीच सनराइजर्स हैदराबाद भी दौड़ में शामिल हुई लेकिन एलएसजी भी पीछे नहीं हटी। दोनों टीमें पंत के लिए बोली लगाते रहे और देखते ही देखते कीमत 20 करोड़ के पार पहुंच गई। एलएसजी ने पंत के लिए 20.75 करोड़ रुपये की बोली लगाई।

यहां हैदराबाद ने हाथ वापस खींच लिए। इसके बाद दिल्ली कैपिटल्स ने राइट टू मैच (आरटीएम) कार्ड का इस्तेमाल किया। लखनऊ ने पंत के लिए 27 करोड़ रुपये की फाइनल कीमल लगाई और दिल्ली ने अपने हाथ पीछे कर लिए। इस तरह पंत 27 करोड़ रुपये में लखनऊ के हो गए। ऋषभ पंत ने 2016 से लेकर अब तक अपने पूरे आईपीएल करियर में दिल्ली कैपिटल्स का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने 111 मैचों में 35.31 की औसत से 3,284 रन बनाए हैं। इस दौरान उन्होंने एक शतक और 18 अर्द्धशतक लगाए हैं। उन्हें 2021 में टीम का कप्तान नियुक्त किया गया था। इस साल दिल्ली ने उन्हें रिलीज कर दिया था।

अर्शदीप पर लगी पहली बोली-

पहली बोली तेज भारतीय गेंदबाज अर्शदीप सिंह पर लगी। अर्शदीप को पंजाब किंग्स ने राइट टू मैच (आरटीएम) कार्ड का इस्तेमाल कर 18 करोड़ रुपये में खरीदा। अर्शदीप पर बोली की शुरूआत चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) ने की थी। अर्शदीप को लेने के लिए सीएसके तथा दिल्ली कैपिटल्स के बीच जंग चली।

बाद में राजस्थान और गुजरात ने भी बोली लगाई। अंत में सनराइजर्स हैदराबाद ने 15.75 करोड़ रुपये की बोली लगाई। इसके बाद पंजाब किंग्स से अर्शदीप के लिए आरटीएम का इस्तेमाल करने के बारे में पूछा गया। पंजाब ने अर्शदीप पर रुचि जताई और आरटीएम का इस्तेमाल किया। इसके बाद हैदराबाद ने अर्शदीप की फाइनल कीमत 18 करोड़ रुपये लगाई, जिसके लिए पंजाब किंग्स तैयार हो गई। इस तरह आरटीएम इस्तेमाल कर पंजाब ने अर्शदीप को 18 करोड़ रुपये में खरीद लिया।

अय्यर 26.75 करोड़ रुपये के साथ दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी

श्रेयस अय्यर को मिले 26.75 करोड़ रुपये

कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) को पिछले साल चैंपियन बनाने वाले श्रेयस अय्यर पर भी आईपीएल 2025 की नीलामी में पैसों की बरसात हुई है। उन्हें पंजाब किंग्स ने 26.75 करोड़ की मोटी रकम में अपने खेमे में शामिल किया है। श्रेयस अय्यर दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी हैं।

बटलर गुजरात टाइटंस में गए-

इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जोस बटलर को गुजरात टाइटंस ने खरीदा। उनका आधार मूल्य दो करोड़ रुपये था। उनके लिए पंजाब किंग्स और गुजरात टाइटंस के बीच जंग देखने को मिली। लखनऊ ने भी रुची दिखाई। अंत में गुजरात ने बटलर को 15.75 करोड़ रुपये में खरीदा। बटलर को राजस्थान रॉयल्स ने रिलीज किया था। उल्लेखनीय है कि मेगा ऑक्शन में कुल 577 खिलाड़ियों पर बोली लग रही है। इनमें देशी और विदेशी दोनों खिलाड़ी शामिल हैं। ऑक्शन में 10 फ्रेंचाइजी अधिकतम 25 खिलाड़ी और कम से कम 18 खिलाड़ी खरीद पाएंगी।

मिचेल स्टार्क दिल्ली के हुए-

तेज ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज मिचेल स्टार्क दो करोड़ रुपये के आधार मूल्य के साथ नीलामी में उतरे थे। उनके लिए केकेआर ने बोली की शुरूआत की। मुंबई इंडियंस ने दिलचस्पी दिखाई। आरसीबी ने भी बोली लगाई। अंत में दिल्ली कैपिटल्स ने स्टार्क को 11.75 करोड़ रुपये में खरीदा।

यशस्वी ने जड़ा ऐतिहासिक शतक

पर्थ। एजेंसी

भारतीय टीम के युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने पर्थ में खेले जा रहे पांच मैचों की सीरीज के पहले टेस्ट मैच में ऐतिहासिक शतक जड़ा। उन्होंने 297 गेंदों का सामना करते हुए शानदार 161 रन बनाए। उन्होंने अपनी इस पारी में 15 चौके और तीन छक्के लगाए। यशस्वी का यह ऑस्ट्रेलिया में पहला शतक रहा। इस शतक के साथ ही उन्होंने कई रिकॉर्ड भी अपने नाम किए।

भारतीय टीम की दूसरी पारी में यशस्वी जायसवाल ने छक्का लगाकर टेस्ट करियर का अपना चौथा शतक पूरा किया। यशस्वी का यह शतक 205 गेंदों में आया। उन्होंने जबरदस्त बल्लेबाजी की और अपनी पारी से भारतीय टीम को मजबूत स्थिति में ला दिया। यशस्वी दूसरी पारी में 161 रन बनाकर आउट हुए।

चारों शतक में बनाए 150 से ज्यादा रन-

गौर करने वाली बात यह है कि यशस्वी ने अभी तक खेले टेस्ट मैचों में जो चार शतक बनाए हैं, वो 150 रनों से ज्यादा रन के रहे। अर्थात 150 से ज्यादा रन की पारी खेलने में कामयाब रहे हैं। यशस्वी ने पिछले साल अपना पहला टेस्ट शतक वेस्टइंडीज के खिलाफ बनाया था।

भारतीय टीम ने दूसरी पारी 487/6 पर की घोषित, ऑस्ट्रेलिया को दिया 534 रन का लक्ष्य

● कोहली ने जड़ा शतक

पर्थ। एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ में खेले जा रहे पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले मैच के तीसरे दिन भारतीय टीम ने अपनी दूसरी पारी 6 विकेट पर 487 रन बनाकर घोषित कर दी है। दूसरी पारी में स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने बेहतरीन शतक जड़ा। उनके शतक को दुनियाभर के क्रिकेट प्रेमियों को काफी समय से इंतजार था। विराट के शतक लगाते ही भारतीय टीम ने पारी घोषित करने का फैसला लिया। विराट ने 143 गेंदों में 100 रन की नाबाद शतकीय पारी खेली। उन्होंने अपनी पारी में आठ चौके और दो छक्के लगाए। यह उनके टेस्ट करियर का 30वां शतक रहा।

भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया के सामने 534 रन का लक्ष्य रखा है। भारतीय टीम ने मैच की पहली पारी में 150 रन बनाए थे। इसके जवाब में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 104 रन पर सिमट गई थी। भारत को दूसरी पारी में 46 रन की बढ़त मिली थी। अब दूसरी पारी में भारत ने 6 विकेट के नुकसान पर 487 रन बनाकर पारी घोषित कर दी है। इस लिहाज से भारतीय टीम की कुल बढ़त 533 रन की हुई और ऑस्टेलिया को 534 रन का लक्ष्य दिया है।

भारतीय टीम ने आज बिना विकेट गंवाए 172 रन से आगे खेलना शुरू किया और आधे घंटे के अंदर ही यशस्वी ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए शतक जड़ दिया। यशस्वी ने छक्का लगाकर टेस्ट करियर में अपना चौथा शतक पूरा किया। तीसरे दिन भारत को पहला झटका केएल राहुल के रूप में लगा।

वह 176 गेंदों में पांच चौकों की मदद से शानदार 77 रन बनाकर आउट हुए। राहुल और यशस्वी के बीच 201 रन की साझेदारी हुई। केएल राहुल के बाद बल्लेबाजी के लिए आए देवदत्त पडिक्कल ने भी यशस्वी जायसवाल का खूब साथ दिया और टीम की लीड को 300 के पार पहुंचाया। लंच के बाद पडिक्कल 25 रन बनाकर आउट हुए। पडिक्कल ने दूसरे विकेट के लिए यशस्वी के साथ 74 रन की साझेदारी निभाई। इसके बाद यशस्वी 150 रन पूरे करने के बाद आउट हो गए। यशस्वी ने 297 गेंदों में 15 चौके और तीन छक्के की मदद से 161 रन बनाए।भारत को 320 के स्कोर पर चौथा झटका लगा।

ऋषभ पंत बड़े शॉट के चक्कर में स्टंप आउट हो गए। पंत ने एक रन बनाया। ध्रुव जुरेल भी एक रन बनाकर आउट हुए। 410 के स्कोर पर वॉशिंगटन सुंदर के रूप में भारत का छठा विकेट गिरा। सुंदर ने 29 रन बनाए। विराट कोहली और नीतीश कुमार रेड्डी ने तेजी से रन बटोरते हुए टीम के स्कोर को 450 के पार पहुंचाया।

एशियाई महिला हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी विजेता मनीषा की सीएम धामी से भेंट

देहरादून। एजेंसी

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से रविवार को उनके सरकारी आवास में एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी विजेता महिला हॉकी टीम की सदस्य व हरिद्वार निवासी मनीषा चौहान ने शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान, मनीषा के साथ उनके माता पिता एवं कोच भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने एशियाई चैंपियनशिप में मनीषा के शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा मनीषा ने उत्तराखंड के साथ पूरे देश का मान सम्मान और स्वाभिमान बढ़ाया है। मुख्यमंत्री ने मनीषा को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दी।

व्यापार

महायुति की जीत से मार्केट सेंटिमेंट्स में सुधार की उम्मीद, आज से बाजार में आ सकती है तेजी

नई दिल्ली। एजेंसी

अक्टूबर के महीने से लेकर अभी तक घरेलू शेयर बाजार लगातार गिरावट का शिकार हो रहा है। विदेशी संस्थागत निवेशकों की लगातार बिकवाली और सितंबर में खत्म हुई तिमाही में ज्यादातर कंपनियों के कमजोर नतीजों की वजह से घरेलू शेयर बाजार पर लगातार दबाव बढ़ता गया है। लेकिन अब महाराष्ट्र के चुनाव के बाद इस बात की संभावना बन रही है कि शेयर बाजार के सेंटीमेंट में सुधार हो सकता है। हालांकि अलग-अलग विशेषज्ञों की इस बारे में अलग-अलग राय है।

धामी सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट प्रशांत धामी का मानना है कि महाराष्ट्र में महायुति सरकार की जीत ने राज्य सरकार के विकास के एजेंडे पर मोहर लगा दी है। इस वजह से उम्मीद करनी चाहिए कि राज्य में विकास की गाड़ी टॉप गियर पर चलती रहेगी। सबसे बड़ी बात तो ये है कि महायुति की जीत से निवेशकों का बीजेपी सरकार के प्रति भरोसा बढ़ेगा, जिसकी वजह बाजार पर बने दबाव में कमी आ सकती है। धामी का कहना है कि लगातार गिर रहे बाजार को एक ट्रिगर की जरूरत थी और ये ट्रिगर महाराष्ट्र में महायुति की जीत भी हो सकती है। अगर अभी घरेलू संस्थागत निवेशकों ने आक्रामक अंदाज में खरीदारी की, तो विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली के बावजूद घरेलू शेयर बाजार में तेजी का रुख बन सकता है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि शुक्रवार को ही घरेलू शेयर बाजार 2 प्रतिशत से अधिक की मजबूती के साथ बंद हुआ है। अब महाराष्ट्र में महायुति की जीत से बाजार की मजबूती का ये सिलसिला आगे बढ़ सकता है। उम्मीद इस बात की भी है कि महायुति की जीत के कारण विदेशी निवेशकों की भी घरेलू शेयर बाजार में वापसी हो सकती है। ऐसी स्थिति में शेयर बाजार एक बार फिर रॉकेट की रफ्तार से आगे बढ़ सकता है।

इसी तरह मित्तल एसोसिएट्स के सीईओ रविकांत मित्तल का कहना है कि महाराष्ट्र में महायुति की जीत से स्टॉक मार्केट में रिवर्सल की स्थिति बन सकती है। महायुति की जीत की उम्मीद की वजह से ही शुक्रवार को शेयर बाजार में जोरदार तेजी आई थी। सेंसेक्स 1961 अंक और निफ्टी 557 अंक से अधिक उछल कर बंद हुए थे। ये स्थिति भी तब थी, जब बाजार को महाराष्ट्र में महायुति की जीत की उम्मीद थी।

विदेशी मुद्रा भंडार 17.8 अरब डॉलर लुढ़ककर 657.9 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में भारी कमी होने से 15 नवंबर को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 17.8 अरब डॉलर लुढ़ककर 657.9 अरब डॉलर रह गया। इसी तरह इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 6.5 अरब डॉलर की बड़ी गिरावट के साथ 675.7 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 15 नवंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 15.55 अरब डॉलर की भारी गिरावट के साथ 569.8 अरब डॉलर पर आ गई। इस अवधि में स्वर्ण भंडार 2.1 अरब डॉलर गिरकर 65.7 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह एसडीआर में 9.4 करोड़ डॉलर की गिरावट आई और यह कम होकर 18.1 अरब डॉलर पर आ गया। इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि में 5.1 करोड़ डॉलर की गिरावट रही।

सर्राफा बाजार में लगातार 5वें दिन तेजी, सोना और चांदी की बढ़ी चमक

नई दिल्ली। एजेंसी

घरेलू सर्राफा बाजार में सोना लगातार पांचवें दिन महंगा हुआ है। शुरूआती कारोबार में इस चमकीली धातु की कीमत में आज 750 रुपये से लेकर 820 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की तेजी दर्ज की गई है। इस तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 79,790 रुपये से लेकर 79,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 73,150 रुपये से लेकर 73,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बना हुआ है। सोने की तरह आज चांदी के भाव में भी तेजी आई है, जिसके कारण दिल्ली सराफा बाजार में इसकी कीमत 93,300 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर पहुंच गई है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 79,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 73,150 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 79,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 73,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 79,690 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 73,050 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 79,640 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 73,000 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 79,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 73,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

संक्षिप्त समाचार

संगीतमय राम कथा आयोजन में पहुंचे सरपंच राज किशोर माली

- पूजा अर्चना कर लिया नंदलराम शरण महाराज से आशीर्वाद

चमकता राजस्थान रघुनंदन पारीक /श्रीनगर। प्लूटो की ढाणी उदयपुर खुर्द में 9 दिवसीय राम कथा ग्रामीणो सहयोग से शुरु की गई आयोजित राम कथा में कथा वाचक श्री राम सके पीठाधीश्वर श्री श्री 108 मंत्र श्री नंदराम शरण जी महाराज द्वारा संगीत में राम कथा का आयोजित किया गया नौ दिवसीय राम कथा में राम वनवास की कथा का मंचन किया गया उसमें राम लक्ष्मण सीता जी सुंदर झांकियां भी सजाई गई। मंत्र श्री नंदराम शरण जी महाराज ने बताया कि अब सनातन धर्म में सभी आने वाली पीढ़ी को अपने धर्म की जानकारी होना अति आवश्यक है। ग्रामीणो ने कथा में भाग लेकर पूजा अर्चना की।

मजरा बावड़ी में गुर्जरों के भोपो की ओर से किया गया फड का वाचन

चमकता राजस्थान /रघुनंदन पारीक /श्रीनगर। अजमेर/ नसीराबादः-श्रीनगर फड वाचन में भोपाल कांनजी व गणेश गुर्जर ने देवनारायण भगवान से जुड़े जीवन के प्रसंगों को गाकर बताया। वही देवनारायण भगवान के पूर्वजों के जीवन व जन्म लीला की जानकारी दी ।भोपा ने जंतर वाद्य यंत्र के साथ फड वाचन किया । भोपे की ओर से दिए गए प्रस्तुति में नाट्य, गायन ,मौखिक, साहित्य चित्रकला व लोक धर्म का अनूठा संगम देखने को मिला। सर्दी के बावजूद माजरा बावड़ी के श्रद्धालु ग्रामीण रात्रि सभा 1:00 बजे तक पड़वा वचन को सुनने के लिए मौजूद रहे। गुर्जर समाज के पंच पटेल ओंकार गुर्जर ,जगमाल कालस, गिरधारी गुर्जर, हरजी खटाना लादू पटेल भंवर लाल कालस ने गाव नेवासी कुचामन से फड वाचन करने आए भोपा कानजी व गणेश गुर्जर का माला साफे से स्वागत किया।

जयपुर में सर छोटूराम जयंती पर एक्सीलेंस अवॉर्ड फॉर एजुकेशन से हर घर शिक्षा टीम सम्मानित

चमकता राजस्थान/धौलपुर रामदास तरुण। धौलपुर 24 नवंबर 24 को आधुनिक भारत के निर्माता और किसानों के मसीहा सर छोटूराम जी की जयंती पर जेवीपी मीडिया ग्रुप ने ₹एक्सीलेंस अवॉर्ड फॉर एजुकेशन₹ समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कर्नल राजेश भूकर निदेशक, सेना कल्याण प्लेसमेंट संगठन ने शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वालों को सम्मानित किया। ₹हर घर शिक्षा₹ टीम के संस्थापक रोहित मीणा और उनके साथियों मोहित व रामप्रकाश को ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष सम्मान दिया गया। टीम के प्रयासों को समाज में जागरूकता और सशक्तिकरण की मिसाल बताया गया। जेवीपी मीडिया ग्रुप के चेयरमैन हरिराम किवाड़ा ने टीम की सराहना करते हुए कहा कि यह अभियान शिक्षा को हर घर तक पहुंचाने का आदर्श उदाहरण है। समारोह में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक और शिक्षाविद उपस्थित रहे।

खेत पर कार्य करने दौरान संदिग्ध स्थिति में युवक की मौत

- पुलिस ने जांच पडताल कर उपजिला चिकित्सालय में कराया पोस्टमार्टम

चमकता राजस्थान। भरतपुर (राजवीर सिंह)। जिले के नदबई क्षेत्र के गांव खटौटी में खेत पर कार्य करने दौरान संदिग्ध स्थिति में युवक की मौत होने का मामला सामने आया। सूचना पर पर पुलिस ने मौके पर जांच पडताल कर उपजिला चिकित्सालय में शव का पोस्टमार्टम कराया। पुलिस के अनुसार खटौटी निवासी धर्मेन्द्र सिंह पुत्र सुखवीर सिंह अपने खेत में पानी देने गया। इसी दौरान अचानक अचेत होकर खेत में गिर गया। घर नही पहुंचने पर परिजनों ने खेत पर जाकर युवक को तलाश किया। जहां खेत में अचेत स्थिति में मिलने पर परिजनों ने युवक को नदबई उपजिला चिकित्सालय में भर्ती कराया। जहां उपचार दौरान युवक की मौत हो गई। परिजनों की सूचना पर पुलिस ने मौके पर जांच पडताल कर शव को कब्जे में लिया। बाद में पुलिस ने उपजिला चिकित्सालय में शव का पोस्टमार्टम कराया। उधर, मामलें में मृतक युवक के पिता सुखवीर सिंह ने पुलिस में मामला दर्ज कराया।

जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों की मिलीभगत से जोन 5 स्थित विवेक विहार में मौत की फ़ैक्ट्री हो रही ईजाद

हाई टेंशन लाइन के पास बिना सैट बैक छोड़े बहुमंजिला इमारत हो रही तैयार

चमकता राजस्थान

जयपुर। ज़िंदगी या पैसा दोनों में से किसी एक को चुनने को कहा जाए तो आमजन ज़िंदगी चुनने की और अग्रसर रहता है लेकिन जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारी ज़िंदगी की अपेक्षा पैसा चुनने में अग्रसर हैं इसके एवज़ में वे किसी की भी ज़िंदगी से खिलवाड़ कर सकते हैं !

ताज़ा मामले में जयपुर विकास प्राधिकरण की मिलीभगत से शहर के ज़ोन पाँच में स्थित 459 -विवेक विहार,न्यू सांगानेर रोड पर मौत की फ़ैक्ट्री ईजाद की जा रही है,वहाँ पर हाई टेंशन लाइन के पास बिना सैट बैक थोड़े छह मंज़िला रिहायशी मकान बन रहा है,हाई टेंशन लाइन के पास क़ानूनन भवन बनाने कई मानदंड हैं जिसके तहत मकान बनाने की इजाज़त नहीं दी जाती है लेकिन मिली जानकारी के अनुसार बिल्डर

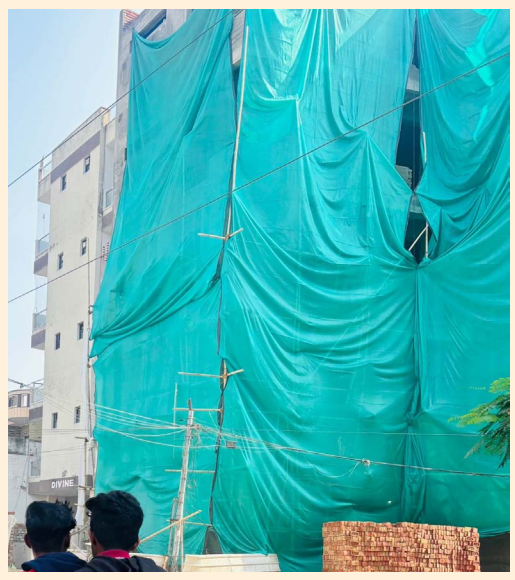

प्राधिकरण मैं नियुक्त इंस्पेक्टर का रिश्तेदार होने एवं अधिकारियों को चाँदी का जूता दिए जाने पर बेख़ौफ़ तीव्र गति से निर्माण करा रहा है, प्लॉट नंबर 459-विवेक विहार जो की हाई टेंशन लाइन के बिलकुल पास स्थित है में विगत पाँच माह के लगभग से निर्माण कार्य जारी है बिल्डर ने छः मंज़िल का निर्माण बिना सेट बैक छोड़े करा लिया है और फ़ॉनिशिंग का कार्य शुरू हो चुका है स्थानीय निवासियों द्वारा लिखित एवं समाचार पत्रों के माध्यम से शिकायत दर्ज करवा दी गई है लेकिन भूमाफिया बिल्डर जयपुर विकास प्राधिकरण में तैनात इंस्पेक्टर यादव का क़रीबी रिश्तेदार होने से अधिकारियों की भरपूर सेवा हुई है इसके चलते शिकायतों के बावजूद हाइटेंशन के पास बिना सेट बैक छोड़े हो रहे निर्माण को रोकने की ज़हमत अब तक नहीं उठायी गई।

पहले भी हाई टेंशन लाइन से हो चुकी है दुर्घटना

ज्ञातव्य है कि इस मकान में पहले भी दो बच्चों की हाई टेंशन के करंट लगने से दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी है इसके बावजूद बिल्डर धड़ल्ले से बेरोकटोक छह मंज़िला रिहायशी फ़्लैट बना रहा है यही नहीं हाई टेंशन से मात्र तीन फुट की दूरी पर छठी मंज़िल का निर्माण भी पूर्ण हो चुका है और फ़ॉनिशिंग का कार्य जारी है जो किसी भी हादसे को निमंत्रण दे रहा है देखने वाली बात है कि अधिकारी इस निर्माण से क्यों अनभिज्ञ बने हुए हैं क्या वे किसी बड़े हादसे के होने का इंतज़ार कर रहे हैं ।

जॉन पाँच के इंस्पेक्टर ने नहीं दिया जवाब

इस निर्माण बाबत जब जयपुर विकास प्राधिकरण में कार्यरत इंस्पेक्टर शिव नारायण यादव को उनके मोबाइल नंबर 9414656926 पर बात की गई तो इंस्पेक्टर ने फ़ोन काट दिया इसके बाद काफ़ी संपर्क करने का प्रयास किया लेकिन फ़ोन नहीं उठाया , मिली जानकारी के अनुसार भू माफ़िया इंस्पेक्टर शिव नारायण यादव का रिश्तेदार है इसके माध्यम से अधिकारियों से निर्माण करता को निर्माण का आशीर्वाद मिला हुआ है।

5 दिसम्बर को गोगामेड़ी की धरती से शीला सुखदेव सिंह गोगामेड़ी करेंगी अपनी रणनीति का एलान

लाखों की तादाद में गोगामेड़ी समर्थकों के मध्य मंच से बड़ी घोषणा होने की सम्भावना

चमकता राजस्थान

जयुर। आगामी 5 दिसम्बर को सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की प्रथम पुण्यतिथि पर उनके पैतृक निवास स्थान पर उनके समर्थको द्वारा ₹गोगामेड़ी स्मृति संकल्प₹ का आयोजन किया जा रहा है, इस आयोजन में देश-विदेश के सर्व-समाज से चाहने वाले लाखों समर्थक शामिल होंगे।

श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना की कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती शीला सुखदेव गोगामेड़ी ने बताया की सुखदेव सिंह गोगामेड़ी सदैव अन्याय के विरूद्ध संघर्षरत रहे, हमारा पूरा संगठन उन्ही के आदर्शो पर आगे बढ़ रहा है, 5 दिसम्बर को उनके समर्थको द्वारा विशाल जन सभा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की अष्ट-धातु आदम कद मूर्ति के अनावरण के साथ-साथ, 11 सामूहिक सामाजिक संकल्प तथा वार्षिक गोगामेड़ी स्मृति सप्ताह की घोषणा की जायेगी।

दहेज़ विरोधी इकाई के अध्यक्ष दलीप सिंह महरौली ने बताया की यह कार्यक्रम अपने आप में ऐतिहासिक होने वाला, इस कार्यक्रम में सर्व समाज के लोग शामिल होंगे, हमारा संगठन सभी राजनीतिक और सामाजिक प्रतिनिधियों एंव संस्थाओ को कार्क्रम के लिए आमंत्रित कर

रहा है, इसके लिए स्वंय शीला जी द्वारा प्रदेश के सभी जिलों का दौरा करते हुए सभी को आमंत्रण देने के साथ-साथ दर्जनों प्रेस वार्ताओं का आयोजन जिला स्तर पर किया गया है। ऐसा संभव है, कि आगामी 5 दिसम्बर को मंच के माध्यम से शीला गोगामेडी द्वारा आगामी रणनीति का पटाक्षेप भी किया जाएगा, क्यूंकि सुखदेव सिंह गोगामेड़ी हत्याकांड को एक वर्ष पूरा होने जा रहा है, लेकिन आज दिन तक मुख्य साजिशकर्ता के नाम सामने नहीं आये है, ना ही कोई कठोर कार्यवाही की गयी है, जिनको पुलिस द्वारा पकड़ा गया है वो मोहरा मात्र है।

अंतराष्ट्रीय ब्राह्मण महासंघ के अध्यक्ष पंकज जोशी ने बताया की सुखदेव सिंह जी सर्व समाज के लिए संघर्षरत रहते थे, उनकी शहादत व्यर्थ नहीं जा सकती, सर्व समाज का सहयोग गोगामेड़ी परिवार के साथ है, पंकज जोशी ने आगे कहा की समय आने पर सुखदेव सिंह जी के न्याय के लिए अगर सड़को पर संघर्ष करना पड़ा तो इस से वो पीछे नहीं हटेंगे।

सुखदेव सिंह गोगामेड़ी के छोटे भाई चैन सिंह गोगामेड़ी ने बतया की इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए नागदा उज्जैन से नरेंद्र सिंह पैदल यात्रा कर के पहुँच रहे है, जबकि जयपुर से महेंद्र सिंह गौड़ साइकिल यात्रा द्वारा इस कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे है, जो अपने आप में अनूठा होगा।

अंत में शीला सुखदेव गोगामेड़ी ने सर्व समाज से मार्मिक अपील करते हुए की 5 दिसम्बर 2024 को गोगामेड़ी पधारने का अनुरोध किया। इस मौके पर करणी सेना से भंवर सिंह नरुका, चैन सिंह शेखावत, नवरतन सिंह राठौड़, मनोज सिंह तंवर, सी एम दुबे, चतर सिंह नरुका, बन्ने सिंह भाटी, महेंद्र सिंह गौड़ आदि उपस्थित रहे।

भा.ज.पा. टहरी मंडल में संगठन महापर्व कार्यशाला संपन्न, सदस्यता अभियान और चुनावी जीत पर चर्चा

चमकता राजस्थान/धौलपुर रामदास तरुण। धौलपुर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय और प्रदेश के नेतृत्व में चलाए जा रहे। संगठन महापर्व सदस्यता अभियान के तहत, भाजपा जिला धौलपुर के टहरी मंडल में आज हनुमान मंदिर परिसर, ग्राम कोलारी में एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह बैठक टहरी मंडल अध्यक्ष विजेंद्र सिंह त्यागी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें सदस्यता अभियान की रणनीतियों पर गहन चर्चा की गई, और कार्यकर्ताओं को अभियान के तहत निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए, जिम्मेदारियां सौंपी गई।

बैठक में राजस्थान विधानसभा उपचुनाव में भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर भी चर्चा की गई। कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व को धन्यवाद देते हुए मिठाई वितरित की और आगामी चुनावों के लिए संगठन को और मजबूत बनाने का संकल्प लिया।

इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में संगठन महापर्व संयोजक लोकेंद्र सिंह परमार, सहसंयोजक बृजराज सिंह, मनोज गर्ग और के. जी तिवारी (बाड़ी विधानसभा संयोजक) उपस्थित रहे। इसके अलावा टहरी मंडल संयोजक सत्यप्रकाश त्यागी, सहसंयोजक देवेंद्र कुमार लोधा, किसान मोर्चा अध्यक्ष महावीर सिंह त्यागी, मंडल महामंत्री शंकर सिंह लोधा, अतर सिंह लोधा, नवलदेव लोधा, मनोज त्यागी, गोविंद सिंह त्यागी, नीरज सिंह लोधा, राधेश्याम त्यागी समेत अन्य बहुसंख्यक कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। कार्यशाला में संगठन के आगामी कार्यक्रमों और चुनावी रणनीतियों पर भी विचार विमर्श किया गया।

एनसीसी दिवस एनसीसी कमान अधिकारी कर्नल जेम्स दत्ता रॉय के निर्देशन में धूम धाम से मनाया

चमकता राजस्थान

भरतपुर (राजवीर सिंह) 24 नवंबर को एनसीसी दिवस के अवसर पर भरतपुर की 6 राजस्थान इंडिपेंडेंट एनसीसी कंपनी ने रांघे राघव कॉलेज वैर के अंडर ऑफिसर कुलदीप सिंह की अध्यक्षता में एक भव्य परेड का आयोजन और जश्न मनाया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, एनसीसी भरतपुर के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल जेम्स दत्ता रॉय ने एनसीसी परिवार के सभी सदस्यों को बधाई दी और कहा कि एनसीसी दुनिया का सबसे बड़ा वर्दीधारी युवा संगठन है। यह संगठन हमारी आजादी के बाद से देश के युवाओं के बीच एकता और अनुशासन को बढ़ावा दे रहा

है, एक मजबूत और अनुशासित राष्ट्र का निर्माण कर रहा है। उन्होंने परिवार को इसकी एकता और विविधता में हमारी एकता का जश्न मनाने के लिए बधाई दी।

एनसीसी दिवस के उपलक्ष्य में भरतपुर की 6 राजस्थान इंडिपेंडेंट एनसीसी कंपनी ने 24 नवंबर को भव्य ×फाइनल से पहले पूरे सप्ताह में कई कार्यक्रम आयोजित किए हैं। पर्यावरण जागरूकता और एकता के संदेश फैलाने के लिए पंडित उमा दत्त स्कूल धौलपुर में नुक्कड़ नाटक और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। पीजी कॉलेज धौलपुर और जेएनवी धौलपुर के कैडेटों ने उस दिन को मनाने और बेहतर पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए 1000 पेड़ लगाए। एवीएम कॉन्वेंट स्कूल धौलपुर, आर्मी पब्लिक स्कूल भरतपुर और मॉडर्न स्कूल, भरतपुर और केंद्रीय विद्यालय करौली के कैडेटों ने स्वच्छ भारत अभियान चलाया और अपने आस-पड़ोस की सफाई करके स्वच्छ और स्वच्छ भारत का संदेश फैलाया।

जेम्स दत्ता रॉय ने कहा कि डीपीएम कॉलेज सरसेना और रांघे राघव कॉलेज वैर दोनों के कैडेटों ने पुनित सागर अभियान में भाग लिया और स्थानीय जल निकायों को साफ करने में मदद की। मिलिट्री स्कूल धौलपुर के कैडेट्स ने राष्ट्रीय एकता का संदेश देने के लिए एकता दौड़ में भाग लिया। संत कृपाल स्कूल के कैडेटों ने देखभाल केंद्र के सभी शरणार्थियों के साथ समय बिताने, उनके मुद्दों को जानने और मदद करने में सक्षम होने और संगठन द्वारा किए जा रहे विशाल मानवीय कार्यों के बारे में प्रचार करने के लिए अपना घर भरतपुर का दौरा किया।

एनसीसी दिवस के उपलक्ष्य में कर्नल जेम्स दत्ता रॉय द्वारा एक रक्तदान शिविर भी आयोजित किया गया, जहाँ सभी इकाइयों के कैडेट जरूरतमंदों के लिए रक्तदान करने के लिए एक साथ आए,रक्तदान के दौरान कई यूनिट रक्तदान भी दिया गया, कई लोगों ने रक्तदान में बढ़ चढ़ कर भी भाग लिया।

एनसीसी दिवस के उपलक्ष्य के दौरान हुई परेड में सूबेदार अजीत सिंह,हवलदार राज कुमार और हवलदार सर्वेश कुमार,जोगेंद्र सिंह एवं अन्य मौजूद रहे '।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929